चकमक

अक्टूबर, 1994 | बाल विज्ञान पत्रिका | रु. 5.00

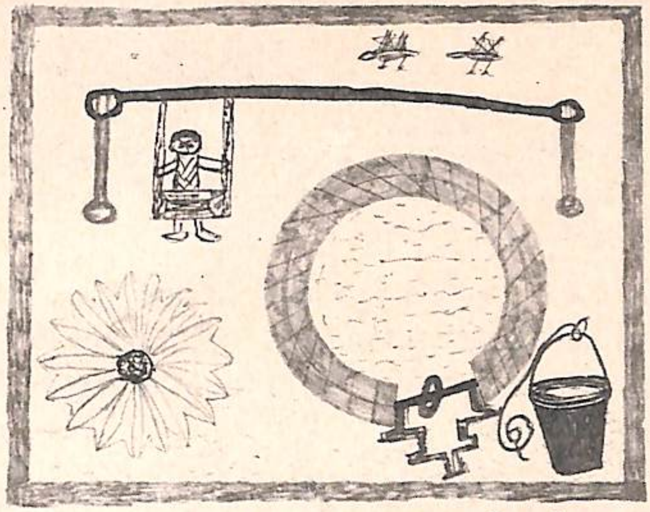
	द			उ	
च	म	गा	द	ड़	
ह		य		न	ख
क		न	त		ल
ना	क		ड़		ब
	व	र्ग	प	हे	ली
	र			मा	



नेहा, चौथी, रूद्रपुर, नैनीताल, उ.प्र.



सत्यनारायण चौहान, नौवीं, हिवाला, होशंगाबाद



उमाकान्त भारद्वाज, बारहवीं, बालोद, म.प्र.

चकमक

मासिक बाल विज्ञान पत्रिका

वर्षः10 अंकः4 अक्टूबर, 1994

संपादक

विनोद रायना

सह-संपादक

राजेश उत्साही

कविता सुरेश

संपादन सहयोग

टुलटुल विश्वास

कला-सज्जा

जया विवेक

उत्पादन/वितरण

कमलसिंह, मनोज निगम

चकमक का चंदा

एक प्रति : पांच रुपए

छमाही : पच्चीस रुपए

वार्षिक : पचास रुपए

डाक ख़र्च मुफ्त

चंदा, मनीआर्डर या बैंक ड्राफ़्ट से एकलव्य के नाम पर भेजें।

कृपया चेक न भेजें।

कागज : यूनिसेफ के सौजन्य से।

पत्र/चंदा/रचना भेजने का पता

एकलव्य,
ई-1/208,
अरेरा कॉलोनी,
भोपाल-462016
(म. प्र.)

फ़ोन : 563380

110 वें अंक में....

विशेष

कविताएँ

कहानी

धारावाहिक

हर बार की तरह

और यह भी

आवरण : जया

एकलव्य एक स्वैच्छिक संस्था है जो शिक्षा, जनविज्ञान एवं अन्य क्षेत्रों में कार्यरत है। चकमक, एकलव्य द्वारा प्रकाशित अव्यवसायिक पत्रिका है। चकमक का उद्देश्य बच्चों की स्वाभाविक अभिव्यक्ति, कल्पनाशीलता, कौशल और सोच को स्थानीय परिवेश में विकसित करना है।

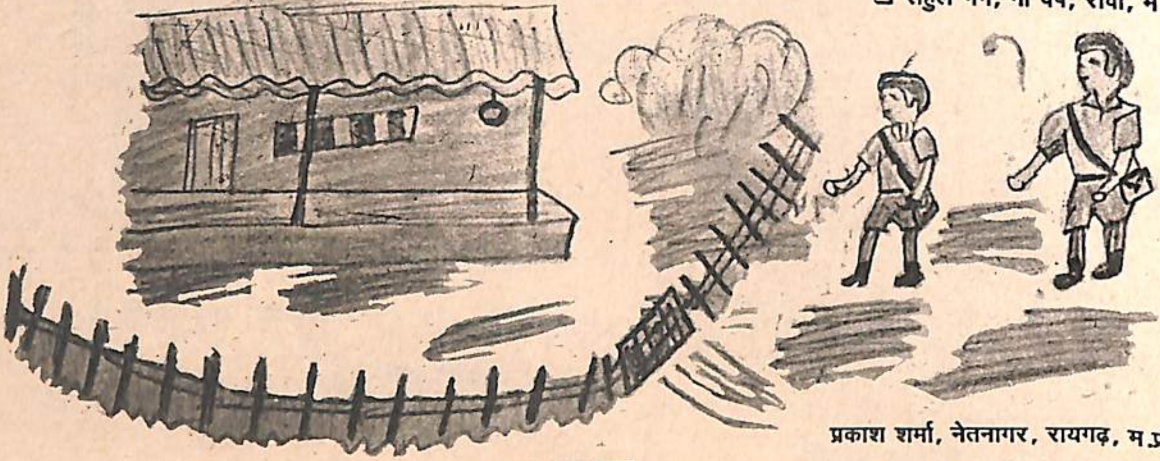


रिक्शेवाला

एक बार मैं विद्यालय जा रहा था। रिक्शे में लड़के बैठे थे। स्कूल थोड़ी दूर बाकी था तभी रिक्शे के पहिए का नट बोल्ट निकल गया। मुझे लगा कि रिक्शा पलट जाएगा। मैं चिल्लाया तो उसने मुझे डाँटा तो मैं चुप हो गया।

लेकिन जब मैंने खूब तेज़ चिल्लाया तो वह रूक गया और बोला, "क्यों चिल्ला रहे हो?" तो मैंने कहा कि रिक्शे का नट बोल्ट निकल गया है। तो उसने देखा और फिर कहा, "हाँ, सही में नट बोल्ट निकल गया है। अगर एक बार पहिया और घूम जाता तो रिक्शा पलट जाता।"

❑ राहुल गर्ग, नौ वर्ष, रीवा, म.प्र.



प्रकाश शर्मा, नेतनागर, रायगढ़, म.प्र.

स्कूल

पहले दिन मैं गया स्कूल
बैठने को हमें मिले स्टूल
फिर कुछ दिन इसी तरह चला स्कूल
जब मैं गया दिन दसवें
लड़कों ने लड़कर मारे एक-दूसरे में बस्ते
एक-दूसरे में मारकर टूट गए स्टूल
मेरा बिगड़ गया स्कूल
जब गया दिन ग्यारहवें मिली टाट-पट्टी
तेरहवें दिन वह भी फाड़कर कर दी इकट्ठी
चौदहवें दिन मिले बैठने को सबको पत्थर
लड़कों ने फिर भी मारे एक दूसरे के पत्थर
फिर तो बंद हुआ स्कूल
ना थे पत्थर, न स्टूल ।

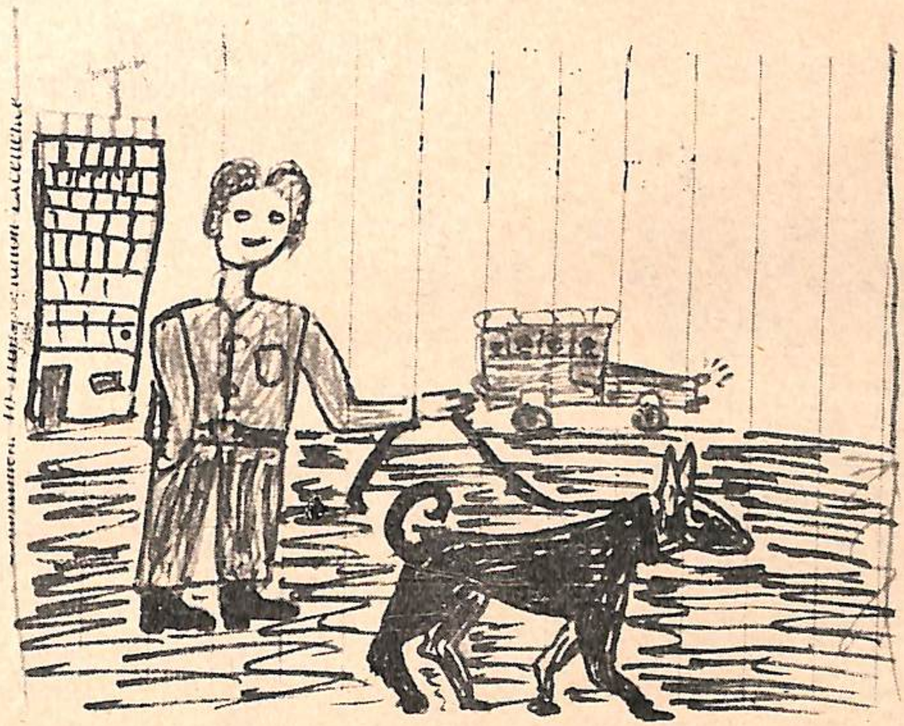
❑ गुरमीत सिंह सिक्ख, बारह वर्ष, गढ़ी बारोद, शिवपुरी, म.प्र.

मेरा पन्ना

घर के पीछे कुत्ता

मेरे घर के पीछे एक किवाड़ टूटा हुआ था। वहाँ पर दो-तीन लड़के आते और खटखटाते थे। हमको बहुत गुस्सा आता था। एक दिन मैं वहाँ पर छिप कर बैठ गया। उस समय एक कुत्ता आया, वह अंदर जाने की कोशिश कर रहा था। मैंने समझा फिर वही लड़के आ गए। मैंने ऊपर से डण्डा फैंका तो कुत्ते को लगा और कुत्ता भौंकने लगा। इतने में वहाँ लोग आ गए और मेरी हँसी उड़ाने लगे।

❑ कन्हैयालाल गंगावत, बारह वर्ष,
ओगाणा, जयपुर, राजस्थान



वर्षा शर्मा, तीसरी, चुकतीपानी, बिलासपुर, म.प्र.

कुकर की सीटी

बात उन दिनों की है जब मैं तीसरी क्लास, में पढ़ता था। एक दिन मैं और मेरा भाई दोपहर के समय स्कूल जा रहे थे। मैंने खाना खाया और मेरे भाई ने भी खाना खाया। लेकिन मेरे भाई ने मज़ाक में कुकर की सीटी अपने बैग में डाल ली और निकालना भूल गया। खाना खाकर हम लोग स्कूल चले गए।

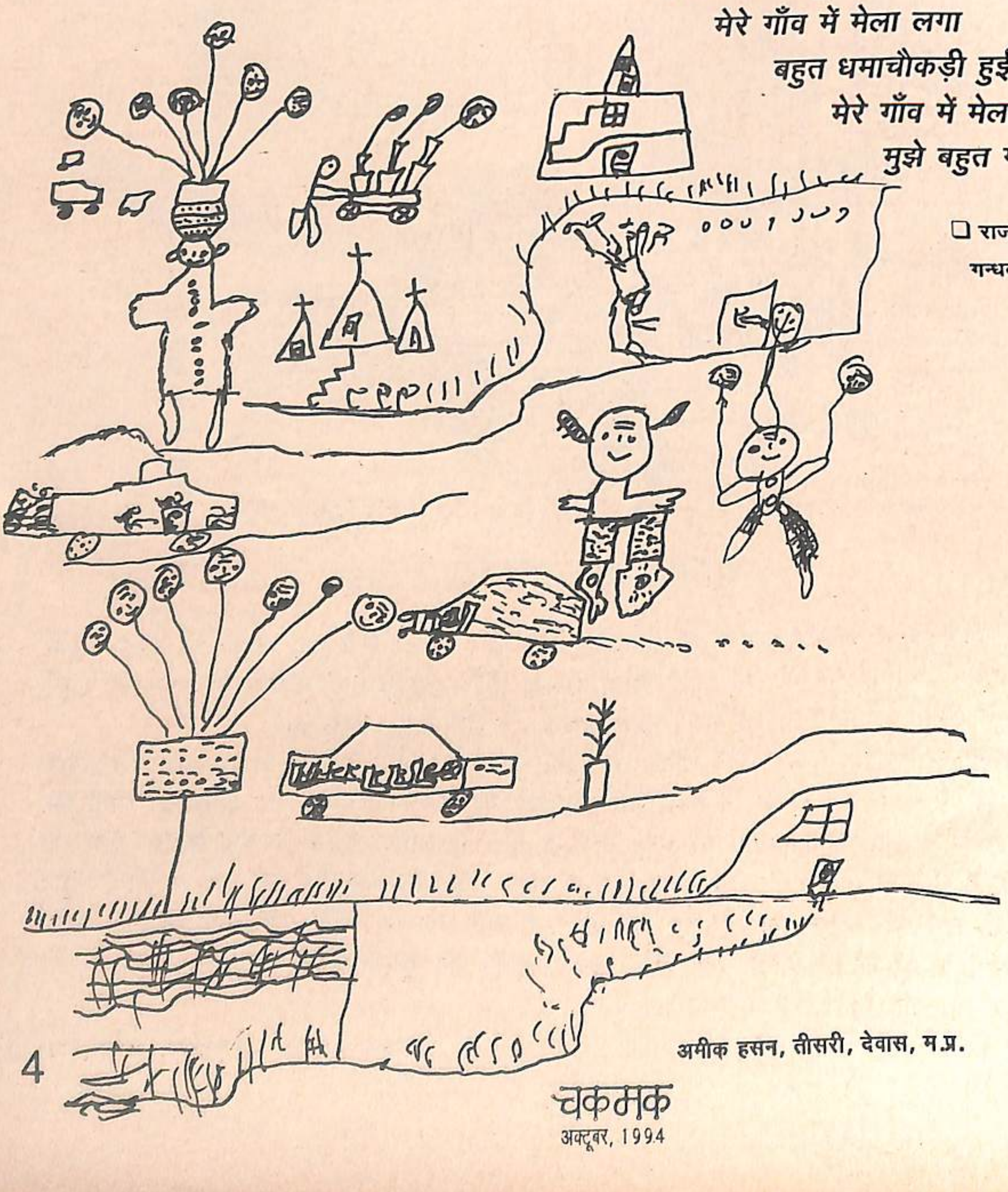
स्कूल में जाकर मेरे भाई ने अपना बैग खोला तो उसमें कुकर की सीटी देखकर घबरा गया। उसने मुझे बताया। मैंने सोचा कि अगर कहीं टीचर ने देख लिया तो खूब मार पिटेगी। इसलिए मैंने कुकर की सीटी ली और बाथरूम के बहाने बाहर चला गया। वैसे छुट्टी तो नहीं मिलती। लेकिन टीचर ने मेरी हालत देखी तो फटाक्-से छुट्टी दे दी। मैंने हालत ही ऐसी बनाई थी। मैं बाहर गया और एक टूटे-फूटे घर में सीटी छुपा आया। उसके दो घण्टे बाद स्कूल की छुट्टी हो गई। और हम लोग घर चले आए। जब शाम को मेरी मम्मी खाना बनाने लगी तो कुकर की सीटी नहीं मिली। तब उन्होंने मुझे बुलाया। जब मुझे याद आया तो मैं भागा-भागा स्कूल गया और कुकर की सीटी ले आया।

❑ मधुकान्त पाण्डे, नारियलखेड़ा, भोपाल, म.प्र.

मेला

मेरे गाँव में मेला लगा
मैं मेला देखने गया
बन्दर वाले, भालू वाले
नए-नए खेल दिखाते
मेले में नए-नए खिलौने आए
मैंने उन्हें ख़रीदा
जलेबी, मिठाई और लड्डू
मैं मेले में खाता था
मैं मेले में झूला झूलता था
मैं मेले में जादू देखने गया
मेरे गाँव में मेला लगा
बहुत धमाचौकड़ी हुई
मेरे गाँव में मेला लगा।
मुझे बहुत मज़ा आया।

❑ राजकुमार, मुजाल्दा,
गन्धवानी, धार, म.प्र.



अमीक हसन, तीसरी, देवास, म.प्र.

मेरा पन्ना

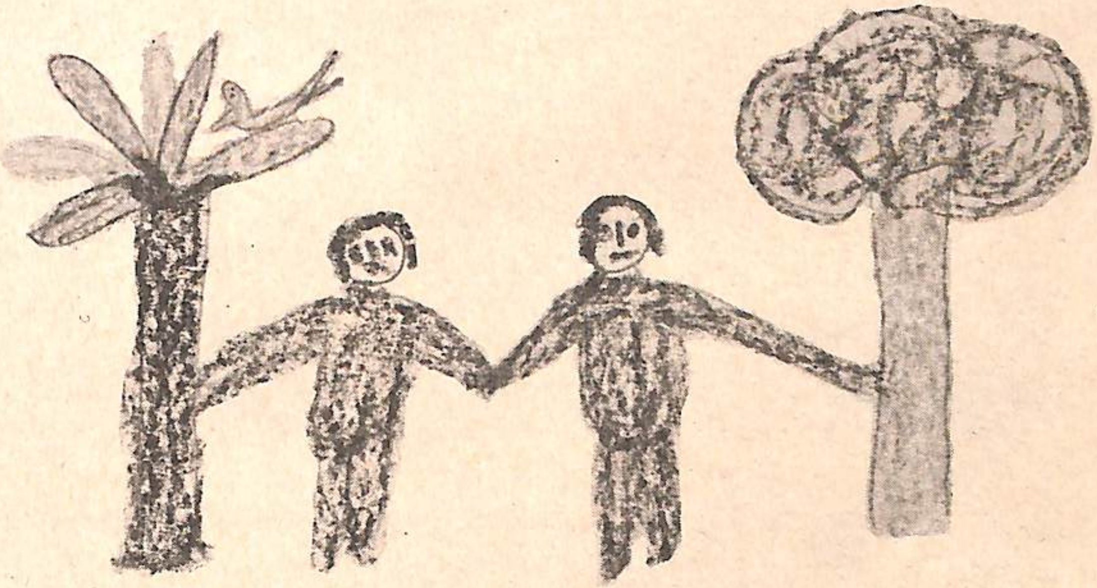
मेरी पिटाई हुई

एक दिन मैं स्कूल जा रहा था। रास्ते में मेरे गुरूजी मिले। मैंने उनसे नमस्ते की। स्कूल पहुँचा घंटी लगी और प्रार्थना हुई। फिर हमारे गुरूजी क्लास में आए। हाजरी भरी और मुझसे प्रश्न पूछा। मुझे याद नहीं था इसलिए मैंने जवाब नहीं दिया। मेरे पास एक लड़का बैठा था उसने उत्तर दे दिया। फिर गुरूजी ने कहा, "सब को पाँच-पाँच चाँटे लगा।"

उसने सबको पाँच-पाँच चाँटे लगाए। छुट्टी हुई और मैं रोता-रोता घर आया। मेरे पिताजी ने पूछा, "क्यों रो रहा है।"

मैंने कहा, "पिताजी मुझे प्रश्न का उत्तर नहीं आया, इसलिए सर ने मुझे मारा।" मेरे पिताजी ने दो चाँटे और लगाए।

❑ पंकज कुमार पोरवाल, बालागुड़ा, मन्दसौर, म.प्र.



सुभाष श्रीवास्तव, आठवीं, ऊँचिया, दतिया, म.प्र.

अनजान आदमी

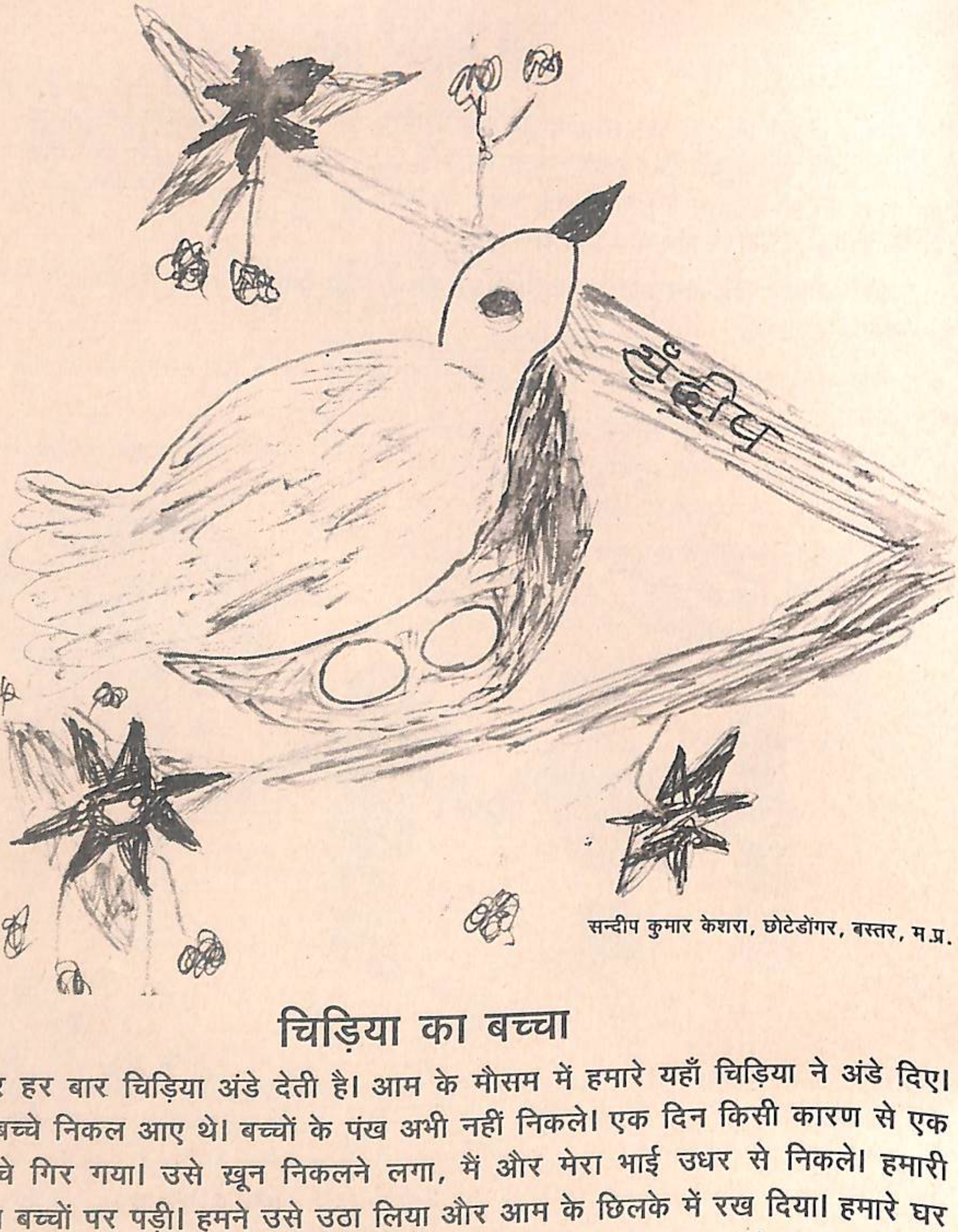
एक वर्ष पहले की बात है। शाम को जब मैं ट्यूशन से आ रहा था तो रास्ते में एक आदमी मुझे रोककर कहने लगा कि तुम्हारे अब्बू जी बुला रहे हैं। फिर मैं जल्दी-जल्दी घर आकर, बस्ता रखकर तुरन्त उसके साथ चला गया। थोड़ी दूर चलने के बाद उसने मुझे गोद में उठा लिया और मेरा मुँह अपने हाथ से दबा दिया और जल्दी-जल्दी चलने लगा। फिर मुझे मन्दिर में ले जाकर हाथ-पैर रस्सी से बाँध दिए। मुझे पेशाब लगी। मैं उससे कहने लगा, "मैं पेशाब करने जाऊँगा। मेरे हाथ-पैर खोल दो।"

फिर उसने हाथ-पैर खोल दिए और कहा, "भागना मत, जल्दी आना।"

मैं पेशाब करने के लिए बाहर निकला। जब मैं पेशाब कर रहा था तो पेड़ के पीछे मेरा एक दोस्त चुपचाप खड़ा था। वह मेरे पास आया और धीरे-से कहा - "चल हम भाग चलें।" और हम दोनों घर भाग आए।

दरअसल मेरा दोस्त हमसे थोड़ी दूरी बनाए चुपचाप पीछे-पीछे गया था। फिर आकर हमने अपने अब्बू को पूरी बात बताई। फिर मेरे अब्बू और चाचा वहीं गए। मगर वहाँ दूर-दूर तक कोई आदमी नहीं था।

❑ मजीद खान, चौथी, अकलतरा, बिलासपुर, म.प्र.



सन्दीप कुमार केशरा, छोटेडोंगर, बस्तर, म.प्र.

चिड़िया का बच्चा

हमारे घर हर बार चिड़िया अंडे देती है। आम के मौसम में हमारे यहाँ चिड़िया ने अंडे दिए। अंडों से बच्चे निकल आए थे। बच्चों के पंख अभी नहीं निकले। एक दिन किसी कारण से एक बच्चा नीचे गिर गया। उसे ख़ून निकलने लगा, मैं और मेरा भाई उधर से निकले। हमारी नज़र उन बच्चों पर पड़ी। हमने उसे उठा लिया और आम के छिलके में रख दिया। हमारे घर एक गाय थी जो बड़ी सीधी थी। हमने गाय का दूध एक कटोरी में लगाया और उस बच्चे को पिलाने की कोशिश की। शाम को हम छत पर सोए। उसे भी अपने साथ रखा। सुबह हम उसे भी अपने साथ छत से नीचे ले आए। कुछ समय बाद हमने देखा कि बच्चा मर गया। हमने उसे झाड़ी के नीचे रख दिया और हम अन्दर चले गए। कुछ देर बाद हमने देखा एक कौआ बच्चे को उठा ले गया।

❑ सोमवती, छठवीं, खुदिया, म.प्र.

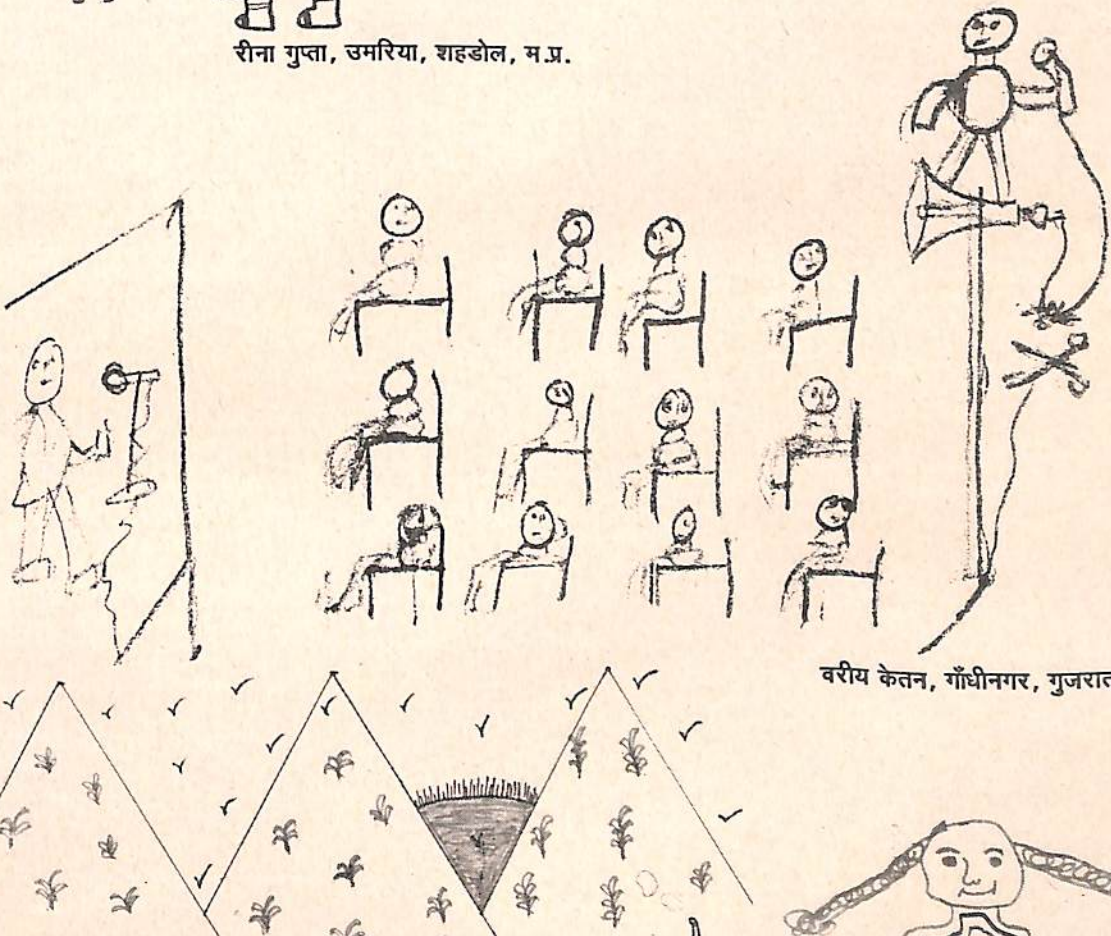
मेरा पन्ना



रीना गुप्ता, उमरिया, शहडोल, म.प्र.



चीकू, पहली,
देवास, म.प्र.



वरीय केतन, गाँधीनगर, गुजरात



मोनिका जैन, सातवीं, कोयम्मुत्तूर, तमिलनाडु



उमेश अग्रवाल, हरदा, म.प्र.



मक्के के पौधे

लहर-लहर लहराते
मक्के के पौधे।

गर्दन करके ऊँची
डंठल झूम रहे,
बाँह एक-दूजे की
पत्ते चूम रहे,

हरी ध्वजा फहराते
मक्के के पौधे।

तन से लिपटे हैं
भुट्टे यूँ बड़े-बड़े,
हों मानों गायों के
वे प्यारे बछड़े,

अपने पास बुलाते
मक्के के पौधे।

घूंघट से छिलकों में
दाने मुस्काते,
मोती की लड़ियों में
हम जीवन पाते,

भूरे केश उड़ाते
मक्के के पौधे।

☐ भगवती प्रसाद द्विवेदी

परिचय, वर्ग पहेली से

❑ राजेश उत्साही

बम्बई के कृष्णकुमार मिश्र और रायपुर, म.प्र. के यूसुफ़ कुरैशी के बारे में शायद ही कोई जानता हो। लेकिन दोनों ही कमाल के व्यक्ति हैं। कृष्णकुमार चाय की एक दुकान चलाते हैं, जबकि यूसुफ़ साइकिल मरम्मत का काम करते हैं। लेकिन दोनों में एक समानता है, दोनों ही वर्ग-पहेली के दीवाने हैं। एक को वर्ग-पहेली हल करने का दीवानापन सवार है तो दूसरे को बनाने का।

कृष्णकुमार अब तक तीन सौ से अधिक इनामी वर्ग-पहेलियों के इनाम जीत चुके हैं। वे कठिन से कठिन वर्ग-पहेली भी भर लेते हैं। पिछले पन्द्रह साल से वर्ग-पहेली के पीछे वे इस कदर पागल हैं कि एकबारगी खाना नहीं खाएँ तो चल जाता है, मगर वर्ग-पहेली भरे बिना उन्हें नींद नहीं आती। दो हज़ार रुपए से अधिक के तो उन्होंने शब्दकोष ही ख़रीदे हैं।

यूसुफ़ पिछले पाँच-छह साल से रायपुर के एक दैनिक अख़बार के लिए वर्ग-पहेली बना रहे हैं, जो प्रतिदिन प्रकाशित होती है। उनकी बनाई पहेलियों के कुछ संकलन भी प्रकाशित हुए हैं।

वास्तव में वर्ग-पहेली है ही ऐसी चीज़। जिसे एक बार चस्का लग जाए, बस फिर वह इसी में खो जाता है। आजकल तो लगभग सभी अख़बारों, पत्रिकाओं में वर्ग-पहेली का नियमित प्रकाशन हो रहा है। हाँ, इनके नाम और स्वरूप थोड़े अलग हो सकते हैं। इन पहेलियों पर हज़ारों रुपए के इनाम भी दिए जाते हैं। और तो और अब तो टेलीविज़न पर भी वर्ग-पहेली पर आधारित कार्यक्रमों का प्रसारण होने लगा है।

तुम भी इससे परिचित होगे ही। चकमक में यह पिछले कुछ सालों से प्रकाशित हो रही है। चकमक की वर्ग-पहेली भरकर कई पाठक भेजते हैं। कुछेक पाठकों ने इसे बनाने में भी रुचि दिखाई है। और पिछले कुछ अंकों से पाठकों की बनाई पहेलियाँ प्रकाशित भी हो रही हैं।

इस बीच वर्ग-पहेली से सम्बंधित ऐसे पत्र भी हमारे पास आते रहे हैं जिनमें पहेली हल करने या बनाने के बारे में पूछताछ होती है। इन सब बातों को ध्यान में रखते हुए ही इस लेख की कल्पना की गई। हो सकता है अब तक तुमने कोई वर्ग-पहेली हल न की हो, यह लेख पढ़कर हल करने लगो। या अब तक तुम सिर्फ़ पहेली हल करते रहे हो और अब बनाने भी लगो। बहरहाल ... तो आओ वर्ग-पहेली से जान-पहचान करने की कोशिश करते हैं।

वर्ग-पहेली को अंग्रेज़ी में 'क्रासवर्ड' के नाम से जाना जाता है। अंग्रेज़ी पत्र-पत्रिकाओं में यह वर्षों से छपती रही है। 'क्रासवर्ड' जैसा कि शब्द से ही पता चलता है, एक-दूसरे को काटते हुए या एक-दूसरे से मिलते हुए शब्द। सामान्यतः 'क्रासवर्ड' बहुत सारे वर्गों का एक समूह है, इसीलिए इसे हिन्दी में वर्ग-पहेली नाम दिया गया है।

वर्ग-पहेली की शुरुआत कैसे हुई यह ठीक-ठीक बताना तो मुश्किल है। लेकिन ऐसी पहली पहेली उन्नीसवीं शताब्दी में इंग्लैण्ड में छपी थी। यह एक सामान्य पहेली थी और बच्चों की नर्सरी कक्षा की किताब में इसका इस्तेमाल किया गया था। सम्भवतः बच्चों को अक्षर ज्ञान कराने के लिए इसका उपयोग किया जाता होगा।

वहाँ से यह अमेरिका पहुँची, जहाँ उसका वह रूप विकसित हुआ, जो हम आज देखते हैं। अमेरिका में वर्ग-पहेली बड़ों के लिए मनोरंजन और ख़ाली समय बिताने का साधन बन गई थी। सन् 1913 में न्यूयार्क के एक अख़बार 'न्यूयार्क वर्ल्ड' के साप्ताहिक अंक 'फन' में ऐसी पहली वर्ग-पहेली प्रकाशित हुई। 1923 के आते-आते यह अमेरिका के सभी प्रमुख अख़बारों में छपने लगी। 'उल्टे बाँस बरेली' की तर्ज़ पर वर्ग-पहेली का यह रूप जब

इंग्लैण्ड पहुँचा तो जैसे लोगों में एक तरह का दीवानापन छा गया। लन्दन के मशहूर अखबार 'सण्डे टाइम्स' में छपने वाली वर्ग-पहेली बहुत लोकप्रिय हुई। हालाँकि यूरोप के अन्य देशों में वर्ग-पहेली को लेकर अधिक उत्साह नहीं देखा गया।

वर्ग-पहेलियों का उपयोग नर्सरी कक्षाओं में बच्चों को शब्दों से परिचित करवाने, मनोरंजन, टाइम पास आदि के अलावा अखबारों द्वारा सर्वेक्षण करने के लिए भी किया गया। सर्वेक्षण से सम्बंधित विषय के संकेत गद्य या पद्य रूप में दिए रहते थे। पाठकों से उस विषय के प्रति दृष्टिकोण को जानने का प्रयास किया जाता था। लेकिन इस तरह की पहेलियों के प्रति अधिक उत्साह नहीं देखा गया।

आजकल प्रचलित वर्ग-पहेली आमतौर पर तो सामान्य ही होती है। यानी उसमें भरे जाने वाले शब्द किसी भी विषय या घटना से सम्बंधित हो सकते हैं। पर कुछ पत्र-पत्रिकाएँ पहेली को किसी खास विषय पर केन्द्रित करके भी बनाती हैं। जैसे फ़िल्मी पत्रिकाओं की पहेली सामान्यतः फ़िल्म तथा उससे जुड़े विभिन्न पहलुओं, व्यक्तियों, घटनाओं पर आधारित होती हैं। इसी तरह खेल, पर्यावरण, चिकित्सा, शिक्षा, व्यापार या ऐसे ही किसी अन्य विषय पर केन्द्रित करके वर्ग-पहेली बनाई जा सकती है।

कई बार पत्र-पत्रिकाओं में छपने वाली पहेली पत्र या पत्रिका के उसी अंक पर आधारित होती है। ऐसे में पहेली भरने या हल करने के लिए यह ज़रूरी हो जाता है कि पाठक पत्रिका को ध्यान से पढ़े।

प्रचलित वर्ग-पहेली (जो चकमक में भी छपती है) दो तरह से बन सकती है। एक जिसे हम सुडौल (सममिति या सिमिट्री वाली) कह सकते हैं। दूसरी वह जिसमें सुडौलपन न हो, यानी बेडौल। दोनों तरह की पहेलियों में वर्गों की कुल संख्या पर कोई रोक नहीं है। वर्गों की संख्या 9 से लेकर 900 या उससे भी अधिक हो सकती है। सुडौल पहेली की एक शर्त यह है कि उसकी जाली में बाएँ से दाएँ और ऊपर से नीचे बने वर्गों की संख्या प्रत्येक पंक्ति में बराबर होगी। दूसरे रूप में कहें तो सुडौल जाली के वर्गों की कुल संख्या किसी न किसी संख्या का वर्गमूल होगी। जैसी 8×8=64, 9×9=81, 7×7=49। दूसरी शर्त यह है कि उसके बन्द किए गए या खाली रखे गए वर्गों की जमावट इस तरह हो कि जाली की आमने-सामने की भुजाओं को बाईं-दाईं या ऊपर-नीचे की माना जा सके। इस बात को तुम सुडौल पहेली बनाते हुए ज्यादा अच्छे से समझ सकते हो। बनाने के तरीके पर हम आगे बात करेंगे। अब जो पहेलियाँ उक्त दोनों शर्तें पूरी न करती हों उन्हें असममिति या बेडौल कह सकते हैं।

दोनों ही तरह की पहेलियों में खाली वर्गों को शब्दों से भरना होता है। शब्द बाएँ से दाएँ तथा ऊपर से नीचे की ओर भरे जाते हैं। यानी जैसे कोई शब्द बाएँ से दाएँ भरा गया है तो उसका कम से कम एक अक्षर ऊपर से नीचे की ओर भरे जाने वाले शब्द का हिस्सा होगा। हर शब्द के लिए एक

शब्द ढूँढो पहेली

ब	ट	मा	ट	र	र	अ	नी	बी	पो	प	लू	ला	मै	बे
रे	डो	न्ट	वा	न्ट	सी	म	ल	व	र	प	यू	गो	फो	हों
डू	य	त	सं	डा	लि	रू	ग	स्व	हा	ल	व	लौ	की	ढा
न	मा	गो	भी	पा	प	द	च्ची	मु	नि	म	अ	मे	री	ऊ
ग	र	मी	मा	र	त	वा	सी	य	टि	न्ढा	ड	मी	स	द्र
बैं	का	स	का	सा	म	प्या	जा	प्र	ज	बू	र	त	न्स	क
इ	रू	या	नि	च्च	द	ज	दौ	ली	र	सी	ज	त	ब	ल
ल	मा	म	गो	थ	बा	नी	मे	मू	रा	ता	र	पू	झा	र
ह	से	ज	ने	बो	न	सू	सी	ग	झा	ला	रे	क	ठ	बे
स	च्य	ल	की	मे	थी	ब	नी	च	क	रा	ल	म	मि	भू
न	म	श	क	पा	ल	ला	ल	आ	बै	म	यू	ट	चीं	ठ
ल	य	रि	ना	म	य	के	तू	लू	वा	ल्की	फि	भो	भ्रू	डा
हि	क	गा	च	ल	स	वा	ली	रा	म	र	सी	स	च्च	र
ह	म	मा	र	व	सै	वा	न्डी	ह	अं	गू	र	वा	म	ज
स	फ	खी	रा	च्च	व	ग	भि	च	क	म	क	ली	रा	गा

इसमें सब्जियों, फलों तथा खाने की अन्य चीज़ों के नाम छिपे हैं। इन्हें बाएँ से दाएँ, दाएँ से बाएँ या ऊपर से नीचे, नीचे से ऊपर किसी भी दिशा में ढूँढा जा सकता है। लेकिन अक्षरों का क्रम बीच में टूटे नहीं। उदाहरण के लिए चार चीज़ों के नाम ढूँढकर बताए गए हैं। यह पहेली चकमक के पहले अंक यानी जुलाई, 85 में प्रकाशित हुई थी।

संकेत होता है। संकेत एक से अधिक भी हो सकते हैं। इन संकेतों को बाएँ से दाएँ तथा ऊपर से नीचे के संकेत कहकर पुकारा जाता है। जाली में आने वाले हर शब्द का एक क्रमांक होता है। हाँ, एक ही क्रमांक के दो शब्द हो सकते हैं। लेकिन उनमें से एक बाएँ से दाएँ भरा जाएगा और दूसरा ऊपर से नीचे। शब्द की क्रम संख्या ही संकेत की संख्या होती है।

वर्ग-पहेली के संकेत-वाक्य, पर्यायवाची शब्द, मुहावरा, कहावत या सामान्य ज्ञान के सवाल आदि के रूप में हो सकते हैं। सुविधा के लिए संकेत के अन्त में कोष्टक में शब्द के कुल अक्षरों की संख्या दी होती है। आमतौर पर आधे अक्षर को अलग से नहीं गिना जाता है। यह ज़रूरी नहीं है कि किसी संकेत से भरा जाने वाला शब्द केवल एक हो, कभी-कभी कोई मुहावरा या कहावत भी शब्दों के रूप में भरी जाती है। ऐसे में एक ही संकेत के शब्द एक से अधिक हो सकते हैं। जब ऐसा होता है तो अक्षरों की संख्या शब्दों के क्रम के अनुसार दी जाती है जैसे 2, 3, 2। यानी भरा जाने वाला पहला शब्द दो अक्षर का है, दूसरा तीन का और फिर तीसरा दो का।

एक अच्छी वर्ग-पहेली की पहचान यह है कि एक तो वह सुडौल हो, दूसरे उसके सभी ख़ाली वर्ग एक दूसरे से जुड़े हों। यानी यदि हम किसी एक ख़ाली वर्ग से चलना शुरू करें तो बिना किसी बाधा के किसी भी अन्य ख़ाली वर्ग में पहुँच जाएँ। इन दोनों बातों के अलावा तीसरी सबसे ज़रूरी बात यह है कि पहेली में भरे जाने वाले शब्दों का चयन अच्छा हो। यहाँ अच्छे का अर्थ है कि वह पहेली हल करने वाले के लिए एक चुनौती हो। यह इस बात पर भी निर्भर करता है कि संकेत कैसा है! अगर संकेत बहुत ही सीधा या आसान है तो चुनौती जल्द ही ख़त्म हो जाएगी। एक औसत वर्ग-पहेली में यदि 30 शब्द भरे जाने हैं तो उसमें से लगभग आधे तो अपने आप यानी अन्य शब्दों के भरे जाने पर ही भर जाते हैं। इसलिए एक अच्छी वर्ग-पहेली के संकेत मुहावरों, कहावतों, पर्यायवाची शब्दों, बिना सिर-पैर के अर्थों वाले वाक्यों, सामान्य

हमारे वृक्ष : पहेली

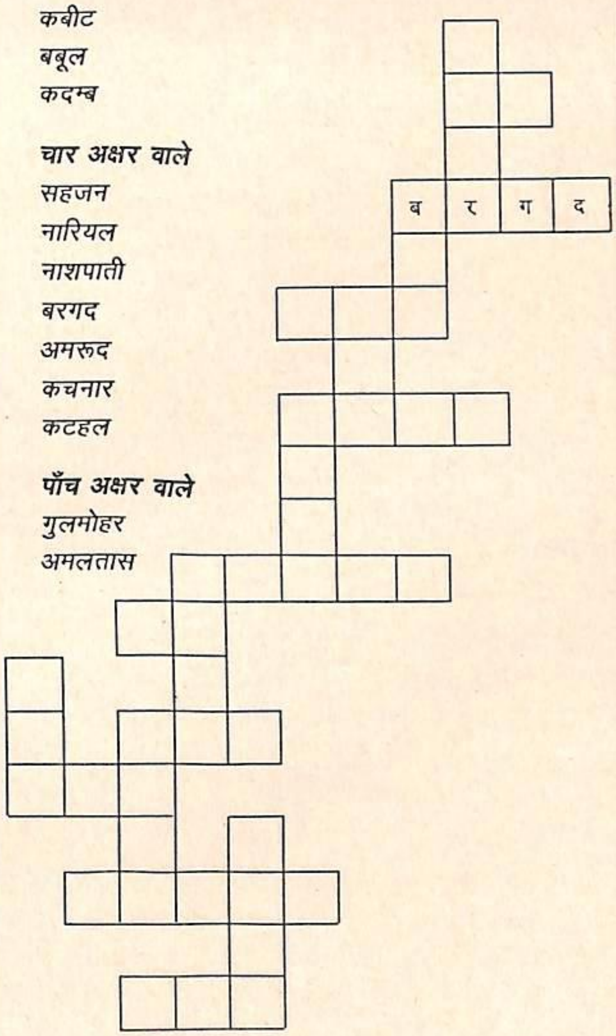
यह एक बहुत ही सरल पहेली है। इसमें भरे जाने वाले शब्द भी यहाँ दिए गए हैं और उनके अक्षरों की गिनती भी। शब्द बाएँ से दाएँ या ऊपर से नीचे भरे जा सकते हैं। इस पहेली की विशेषता यह है कि इसमें भरे जाने वाले सभी शब्द पेड़ों के नाम हैं। और साथ ही ये पेड़ भी वे हैं जो चकमक में 'हमारे वृक्ष' श्रृंखला में छपे हैं। उदाहरण के लिए एक शब्द पहेली में भरा गया है।

दो अक्षर वाले
नीम
चम्पा

तीन अक्षर वाले
पलाश
जामुन
अशोक
पीपल
कबीट
बबूल
कदम्ब

चार अक्षर वाले
सहजन
नारियल
नाशपाती
बरगद
अमरूद
कचनार
कटहल

पाँच अक्षर वाले
गुलमोहर
अमलतास





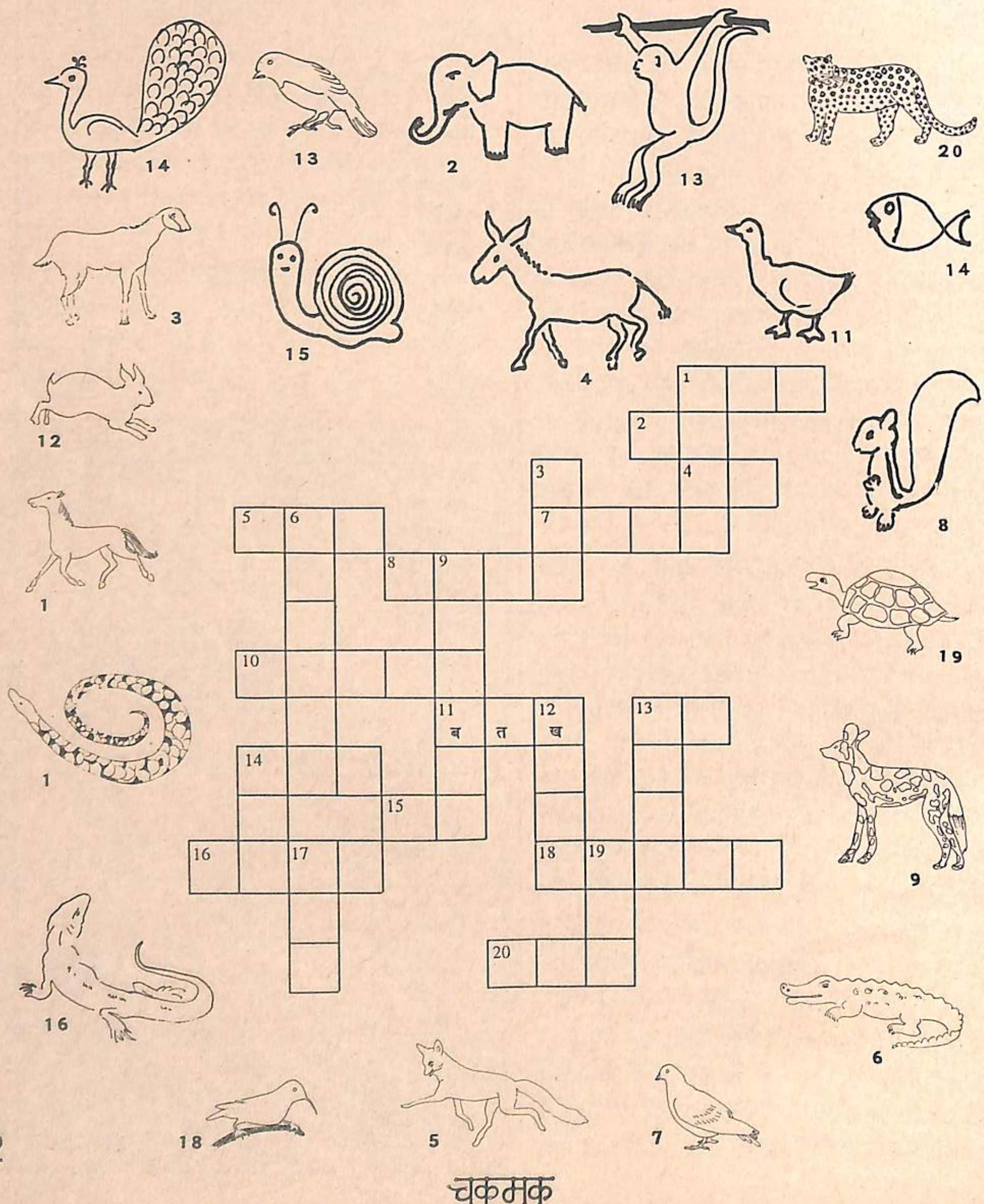
17

चित्र वर्ग पहेली

इस पहेली को हम चित्र वर्ग पहेली कह सकते हैं। चित्रों में दिए गए जानवरों पक्षियों को पहचानकर उनके नाम पहेली में भरना है। शब्द बाएँ से दाएँ या ऊपर से नीचे भरे जाएँगे। आमतौर पर आधे अक्षर के लिए अलग से वर्ग नहीं होता है, लेकिन इसमें एक-दो शब्द ऐसे हैं, जिनमें आधे अक्षर के लिए एक पूरा वर्ग है। चित्रों और वर्गों में डले क्रमांकों का भी आपस में सम्बंध है।



10

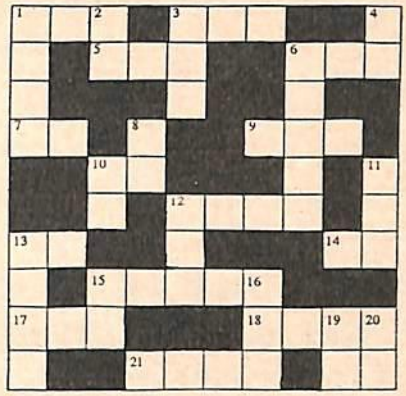


ज्ञान के सवालों आदि का मिला-जुला रूप होते हैं। ताकि हल करने वाले को पर्याप्त माथापच्ची करनी पड़े।

कई पाठक पूछते हैं कि वर्ग-पहेली में सुडौलता क्यों होनी चाहिए? या सभी खाली वर्ग या उनमें भरे जाने वाले अक्षर एक-दूसरे से जुड़े क्यों होना चाहिए? सुडौलता होने की बात का सीधा जवाब तो यह है कि इससे पहेली सुन्दर लगती है। लेकिन इन दोनों सवालों का वास्तविक जवाब पहेली बनाने के तरीकों में छुपा है। सुडौल होने या अक्षर जुड़े होने की शर्त के कारण पहेली बनाने वाला कुछ सीमाओं में बंधा होता है। इस वजह से पहेली बनाते समय उसे अधिक सोच-विचार, माथापच्ची करनी पड़ती है, वह मनमानी नहीं कर सकता। जबकि बेडौल पहेली बनाने में एक तरह की अराजकता होती है। इन बातों को वर्ग-पहेली बनाने के तरीक़े विस्तार में देखने पर और अच्छे से समझा जा सकता है।

बेडौल पहेली

इसे बनाने के लिए ऐसी जाली ली जाती है जिसके सभी वर्ग ख़ाली हैं। इन वर्गों में अपनी मनमर्ज़ी से जहाँ चाहे वहाँ शब्द रख दिए जाते हैं। अन्त में जो



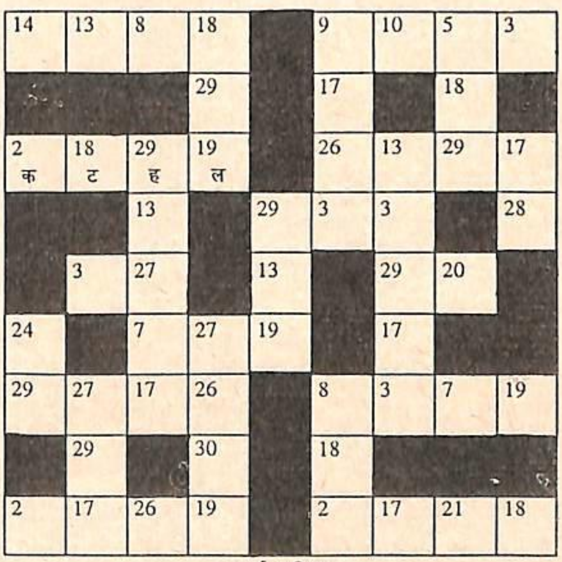
वर्ग ख़ाली बचते हैं उन्हें बन्द कर दिया जाता है। इस तरह जो पहेली बनकर तैयार होती है, उसमें हो सकता है कि सभी अक्षर एक दूसरे से जुड़े न हों। ऐसा होने पर पूरी वर्ग पहेली एक न रहकर तीन-चार टुकड़ों में बँटी हो सकती है। ऐसी पहेली हल करने में आनन्द कम, खीझ अधिक आती है। क्योंकि किसी एक शब्द से अन्य किसी शब्द को भरने में कोई मदद नहीं मिलती। दूसरे, चूँकि पहेली बनाने वाला किसी नियम या सीमा में बंधा नहीं होता है इसलिए वह या तो इतने सरल शब्द रखता है कि तुरन्त भर जाएँ या फिर इतने कठिन कि शब्दकोष लेकर बैठना पड़े। एक बेडौल पहेली की जाली का चित्र ऊपर दिया गया है।

अंक अक्षर पहेली

यह एक अलग तरह की पहेली है। इसमें तुम हरेक ख़ाली वर्ग में एक संख्या लिखी हुई देख रहे हो। प्रत्येक संख्या एक अक्षर की सूचक है। किस वर्ग में कौन-सा अक्षर आएगा, यह जानने के लिए सन्दर्भ जाली की मदद लेनी होगी।

इस पहेली में क से ह तक के तीस व्यंजनों (क ख ग घ च छ ज झ ट ठ ड ढ त थ द ध न प फ ब भ म य र ल व श ष स ह) का उपयोग किया गया है। हरेक व्यंजन का एक क्रमांक है।

उदाहरण के लिए वर्ग पहेली की जाली में एक शब्द कटहल भरा गया है। सन्दर्भ जाली में इस शब्द के चारों अक्षरों के क्रमांक बताए गए हैं। अब इन चार अक्षरों के आधार पर ही तुम्हें अन्य अक्षरों के क्रमांक मालूम करने होंगे। हाँ, एक इशारा हम और किए देते हैं कि क से ह तक इन व्यंजनों को क्रमांक देते समय एक विशेष क्रम दिया गया है।



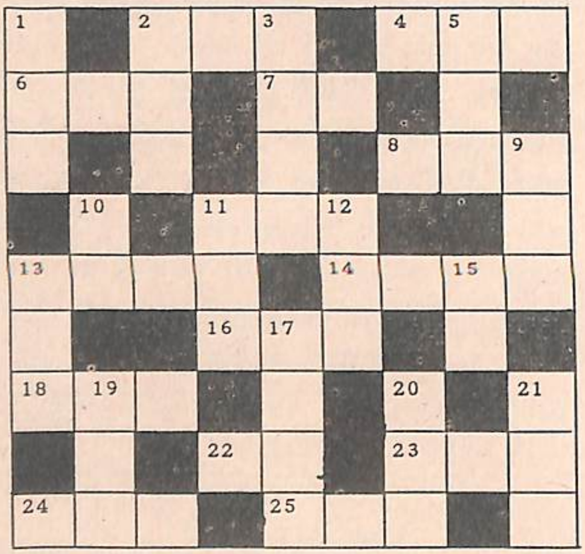
सन्दर्भ तालिका

1	2 क	3	4	5	6	7	8	9	10
11	12	13	14	15	16	17	18 ट	19 ल	20
21	22	23	24	25	26	27	28	29 ह	30

सुडौल पहेली

इसे बनाने के दो तरीक़े हैं। पहले तरीक़े में पहले से तैयार जाली ली जाती है। तैयार जाली का अर्थ है-

1. जाली में ख़ाली और बन्द वर्गों की जगह तय है,
2. जाली में आने वाले कुल शब्दों, की संख्या तय है, उनके क्रमांक तय हैं,
3. साथ ही अलग-अलग जगह पर आने वाले शब्दों के अक्षरों की संख्या भी तय है।



यहाँ ऐसी ही एक सुडौल जाली का चित्र देखो। उदाहरण के लिए क्रमांक-1 पर ऊपर से नीचे की ओर जो शब्द रखा जाएगा, वह तीन अक्षर का होगा। शब्द ऐसा चुनना होगा जिसके बीच वाले अक्षर से क्रमांक-6 पर बाएँ से दाएँ का एक शब्द बने और वह भी तीन अक्षर का ही होगा। अब क्रमांक-2 पर ऊपर से नीचे तीन अक्षर वाला एक ऐसा शब्द रखना है जिसके बीच का अक्षर क्रमांक 6 पर रखे गए शब्द का आख़िरी अक्षर हो। इतना ही नहीं क्रमांक-2 पर रखे गए शब्द का पहला अक्षर ऐसा होना चाहिए जिससे बाएँ से दाएँ का शब्द भी बने। और यह शब्द भी ऐसा होना चाहिए जिसके आख़िरी अक्षर से क्रमांक-3 का ऊपर से नीचे का शब्द बने। यह क्रम इसी तरह आगे बढ़ता जाएगा।

दूसरे तरीक़े में तुम खुद जाली बना सकते हो। इसके लिए ख़ाली वर्गों वाली एक जाली लो। इसके कुल वर्गों की संख्या किसी संख्या का वर्गमूल होनी चाहिए। बेहतर होगा अगर यह संख्या विषम हो।

इसमें अपनी इच्छानुसार कुछ वर्गों को बन्द कर दो, लेकिन इस बात का ध्यान रखते हुए कि पहेली सुडौल बने। वास्तव में इसमें शब्द रखने और वर्ग बन्द करने की क्रिया साथ-साथ चलेगी। उदाहरण के लिए मान लो कि यहाँ दी हुई जाली के सभी खाने अभी ख़ाली हैं। अब अगर तुमने पहली पंक्ति में बाएँ से दाएँ का तीसरा वर्ग बन्द किया है, तो सबसे नीचे की पंक्ति में दाएँ से बाएँ का तीसरा वर्ग बन्द करना होगा। अब पहली पंक्ति के बाएँ से दाएँ के ख़ाली दो वर्गों में कोई शब्द रख लो। इसी तरह सबसे नीचे की पंक्ति के आख़िरी दो वर्गों में भी एक शब्द। अब पहली पंक्ति के पहले वर्ग में आए अक्षर से ऊपर से नीचे का कोई शब्द बनाओ। मान लो वह चार अक्षर का बना यानी ऊपर से नीचे की पहली पंक्ति के पहले चार वर्गों में एक-एक अक्षर होगा और पाँचवा वर्ग बन्द होगा।

अब इसी तरह चार अक्षरों का एक ऐसा शब्द सोचो, जिसका अन्तिम अक्षर ऊपर से नीचे की आख़िरी पंक्ति के आख़िरी वर्ग में भरा अक्षर हो। जब इस शब्द को ऊपर से नीचे की आख़िरी पंक्ति के अन्तिम चार वर्गों में भर दोगे तो उनके ऊपर का यानी पाँचवा वर्ग बन्द करना होगा। बस शब्दों को रखने और वर्गों को बन्द करने का क्रम इसी तरह जारी रहेगा।

ज़ाहिर है कि न केवल पहेली बनाने वाले को, बल्कि हल करने वाले को भी काफी सोच विचार और माथापच्ची करनी पड़ेगी।

यह तो रही वर्ग-पहेली की जाली चुनने और उसके वर्गों में शब्द रखने की बात। अब हम संकेतों की बात करें।

एक मायने में वर्ग-पहेली का अर्थ है दिए गए संकेत में से ही सही शब्द ढूँढ निकालना। इसलिए बनाने और हल करने वाले दोनों को ही संकेतों पर

अधिक ध्यान देना चाहिए। आमतौर पर इस्तेमाल किए जाने वाले संकेत इस तरह के हो सकते हैं-

1. परिभाषित वाक्य

भरे जाने वाले शब्द की व्याख्या करने वाले वाक्य। जैसे 'रूठे हुए को खुश करना' या 'जिस पर चाकू-छुरियाँ तेज की जाती हैं'। आमतौर पर ऐसे संकेत सरल होते हैं।

2. पर्यायवाची शब्द

भरे जाने वाले शब्द के लिए संकेत के रूप में उसका पर्यायवाची शब्द दिया रहता है। जैसे नौकर के लिए 'चाकर' या 'सेवक'। शब्द अन्य किसी भाषा का भी हो सकता है।

3. द्विअर्थी शब्द

कभी-कभी किसी ऐसे शब्द का इस्तेमाल किया जाता है जिसका अर्थ अलग-अलग स्थितियों या सन्दर्भों में अलग-अलग होता है। जैसे हल के लिए संकेत हो सकता है 'औजार भी और समस्या का निराकरण भी।' या मही के लिए संकेत होगा 'पेय भी और पृथ्वी भी।'

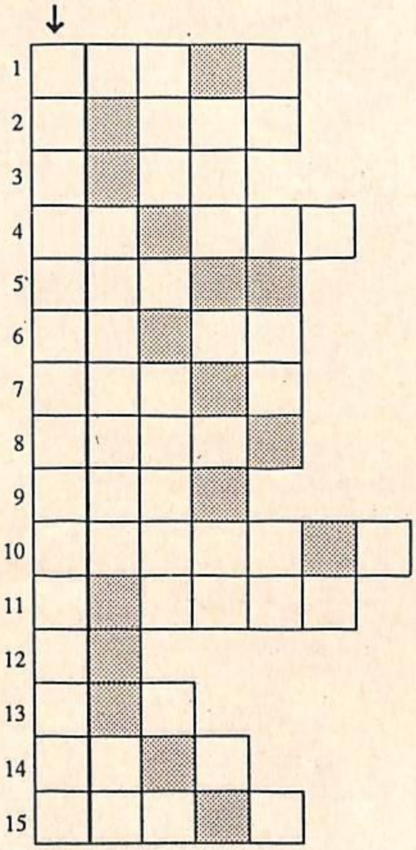
सरल वर्ग-पहेली

यह भी एक शब्द पहेली है। कुछ अर्थों में इसे सरल वर्ग-पहेली कहा जा सकता है।

इसमें 'ऊपर से नीचे' भरे जाने वाले शब्दों की केवल एक पंक्ति है - बाएँ से पहली, जिसे तीर से दिखाया गया है।। इस एक पंक्ति में 15 वर्ग हैं और हरेक में एक अक्षर आएगा। ऊपर से नीचे की ओर पढ़ने पर पूरे वाक्य का एक खास अर्थ भी होगा।

अब बाएँ से दाएँ देखो। ऊपर से नीचे के हरेक वर्ग से वर्गों की एक पंक्ति बनती है और उसमें आने वाले अक्षर से शुरू होकर (बाएँ से दाएँ) एक शब्द या वाक्य बनेगा। ऊपर से नीचे के प्रत्येक वर्ग को एक क्रमांक दिया गया है, वही उसके अक्षर से बाएँ से दाएँ बनने वाले शब्द का संकेत क्रमांक भी है।

इसके अतिरिक्त कुछ वर्गों को स्क्रीन से भरा दिखाया गया है। वास्तव में इन वर्गों में आए अक्षरों से ऊपर से नीचे के क्रम में चलते हुए कुछ शब्द बनेंगे। ऊपर से नीचे जाते हुए बाएँ या दाएँ भी जा सकते हैं।



संकेत : ऊपर से नीचे

'सुख के दिन हर समय नहीं रहते।' इसे मुहावरे में कहो (2, 2, 1, 3, 2, 3, 2)

संकेत : बाएँ से दाएँ

1. दीवाल रचारी की गड़बड़ में प्राचीर (5)
2. .... बहता पानी (3, 2)
3. सुधाकर का विलोम (4)
4. 'नहा के थल में' आओ तो वश में रखो (3, 2, 1)
5. किसी चीज़ के सड़ने के लिए ज़रूरी है (2, 3)
6. रिश्वत : भले ही महँगी है, पर है तो निम्नस्तर की (2, 1, 2)
7. 'मिली याद करना' में है बीच का (5)
8. लज्जित करना (2, 3)
9. तकनीक फिर खोजने में खिलौना (4)
10. 'मैं तुम्हें अच्छी तरह से जानती हूँ।' इसे मुहावरे में कहो (2, 2, 3)
11. शरीर का ढाँचा (3, 3)
12. ताँबे का सिक्का जिसका मूल्य कभी आधे पैसे के बराबर होता था (2)
13. मुग्ध करना (3)
14. देश का प्रथम नागरिक (4)
15. खोज-पड़ताल (5)

4. कहावत या मुहावरे

वर्ग-पहेली में कहावतों और मुहावरों का उपयोग चार चाँद लगाने का काम करता है। इनका उपयोग दो तरह से किया जाता है। पहला, किसी कहावत या मुहावरे का आधा हिस्सा संकेत के रूप में देना, शेष शब्द के रूप में पहेली में भरवाना। जैसे '... लोक से मथुरा न्यारी' या'... के फकीर।'

दूसरा तरीक़ा है मुहावरे या कहावत का अर्थ देकर, मुहावरे या कहावत को अपने मूलरूप में पहेली में भरवाना। जैसे 'आज का काम कल पर मत टालो।' (काल करे सो आज कर) या 'थोड़ा-थोड़ा करके बहुत' (बूँद-बूँद से घट भरे)।

5. संकेत वाक्यों में ही छिपे शब्द

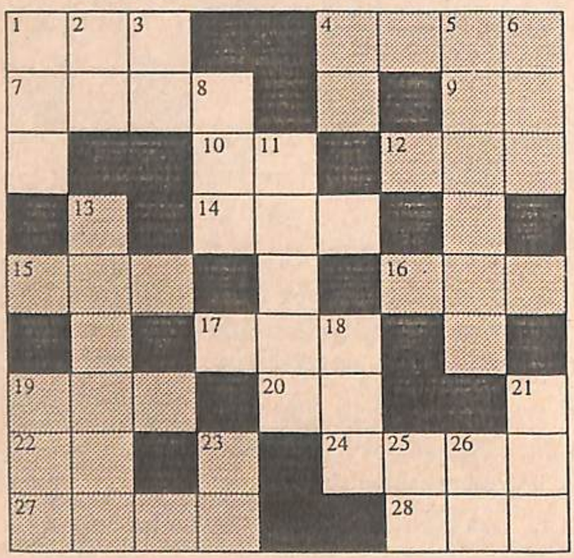
कई बार दिए गए संकेत वाक्य का अपने आप में कोई अर्थ नहीं होता, लेकिन शब्द उसी में छिपा होता है। ऐसे संकेत वाक्यों में एक हिस्सा हमेशा वह होता है जिससे शब्द के अर्थ का पता चलता है और दूसरे हिस्से से शब्द की रचना मालूम पड़ती है। जैसे 'आधा नहीं, जला, पर बीमारी तो है' (3)। इस वाक्य में बीमारी एक संकेत है यानी जो भी शब्द आएगा वह एक बीमारी है। अब शेष वाक्य यानी 'आधा नहीं' यानी 'नहीं' का आधा यानी 'न' और 'जला', तो 'नजला' निकल आएगा।

कुछ संकेत वाक्य ऐसे होते हैं जिनमें शब्द मूल रूप में ही छिपे होते हैं। जैसे 'कल हम में झगड़ा (3)' यानी 'कलह'।

इसी तरह कुछ संकेत वाक्यों में शब्द ढूँढने के लिए वाक्य के कुछ शब्दों को तोड़कर फिर से

वर्ग-पहेली : एक

यह एक सुडौल वर्ग-पहेली है, लेकिन इसके सभी अक्षर (या ख़ाली वर्ग) एक दूसरे से जुड़े नहीं हैं। इससे पूरी पहेली तीन हिस्सों में बँट गई है। तीन में से दो हिस्सों को स्क्रीन से दिखाया गया है।



संकेत : बाएँ से दाएँ

1. कथा (3)
4. व्यायाम (4)
7. ठण्डे को ठण्डा, गरम को गरम रखे (4)
9. गुस्से में मरने का आदेश (2)
10. इनमें प्रायः पेड़ों या पौधों के बीज रहते हैं (2)
12. उज्जैन के एक राजा से जुड़ा पात्र (3)
14. कुंओं से पानी निकालती है (3)
15. बिना पत्तों का (3)
16. शुरुआत (3)
17. पहले नौकरी से निकाला, फिर रखा (3)
19. उपासक में रूई (3)
20. आवाज़ (2)
22. साथ-साथ (2)
24. चीन में बनने वाला एक सूती कपड़ा (4)
27. भारतीय सब्ज़ी, मगर काँटेदार (4)
28. एक अनाज (3)

संकेत : ऊपर से नीचे

1. उक्ति या किसी के द्वारा कही बात (3)
2. माला भी, पराजय भी (2)
3. एक तो करेला, उस पर... चढ़ा (2)
4. किस समय? (2)
5. .... जोगी... पानी (3-3)
6. द्रव (3)
8. यात्रा (3)
11. फ़सलों का ... देख मन झूम उठता है (5)
13. ठण्ड में होती है (6)
18. दूसरों पर बोझ बनना (3)
19. पीड़ा भी, दर्द भी और बैर भी (3)
21. पेड़ की शाखा (3)
23. जो गया भी, आएगा भी (2)
25. गीला (2)
26. चीख़ (2)

जमाने के लिए कहा जाता है, और इस क्रिया में ही मूल शब्द मिलता है। जैसे 'थोड़ा सा मुरमुरा बाद में नीम' (3), यानी 'मु' और 'नीम' तो बनेगा 'मुनीम'।

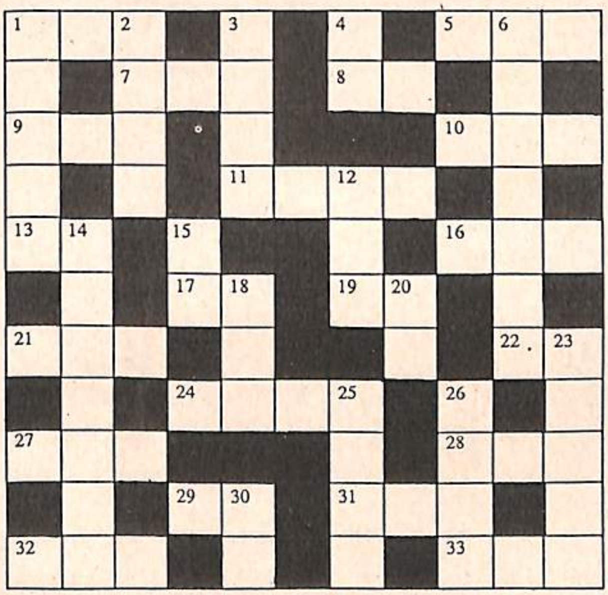
कुछ संकेतों में मूल शब्द किसी एक ही शब्द में मौजूद होता है, लेकिन उसके अक्षरों की जमावट भिन्न होती है। जैसे 'मालक गड़बड़ है, मगर है गज़ब'। इसमें 'मालक' के अक्षरों की जमावट बदलने पर 'कमाल' बनेगा।

संकेतों के कुछ और प्रकार भी हो सकते हैं। लेकिन वे तुम्हें ही ढूँढने होंगे, वर्ग-पहेली हल करते हुए या बनाते हुए। पर हाँ, यह याद रखना कि संकेत का हर शब्द महत्वपूर्ण होता है। उसे ध्यान से पढ़ो, जैसा कहा जा रहा है, वैसा करो। शब्द ज़रूर मिलेगा। वाक्य में लगे अर्धविराम, विराम आदि पर भी ध्यान दो। संकेत में इनका भी महत्व होता है। वर्ग-पहेली हल करते समय सबसे पहले उस संकेत पर ध्यान देना चाहिए जो आसानी से समझ आ गया हो। क्योंकि एक शब्द के भरते ही अन्य शब्दों के संकेत मिलने लगते हैं।

वर्ग-पहेली बनाना या हल करना कोई मुश्किल काम नहीं है। ज़रूरत होती है बस थोड़ी सी एकाग्रता की। चकमक में अब तक प्रकाशित वर्ग पहेलियों में से कुछ का प्रकाशन हम यहाँ पुनः कर रहे हैं, ताकि उन्हें हल करते हुए तुम वर्ग-पहेली के बारे में अधिक गहराई से जान सको। इन पहेलियों के हल अगले अंक में प्रकाशित किए जाएँगे। ▫▫

वर्ग-पहेली : दो

इस पहेली में वर्गों की संख्या अन्य पहेलियों से कहीं अधिक है। साथ ही यह जाली भी चार भागों में बँटी हुई है। पता करो कैसे!



संकेत : बाएँ से दाएँ

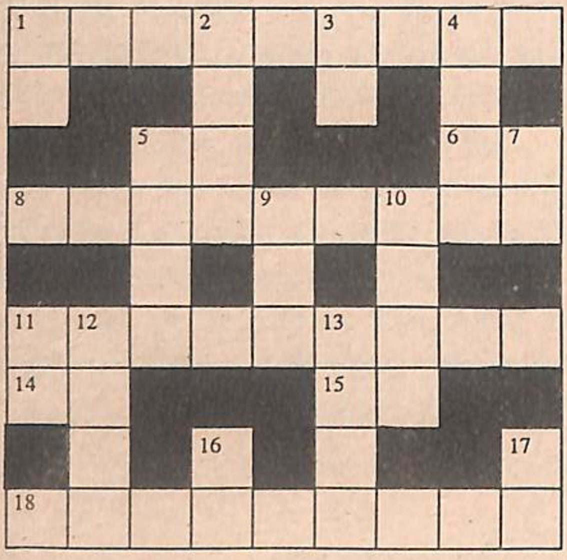
1. मीठा या सुरीला (3)
5. जिसका मेल न हो (3)
7. किंतु, जानवर (3)
8. शर्म, उल्टा जला (2)
9. सभा न जाने में रिश्तेदार (3)
10. नामविहीन (3)
11. सूरज का दिन या छुट्टी का दिन (4)
13. लात पड़ी सिर पर तो नज़र आया पेंदा (2)
16. जहाँ पैसा रखते हैं (3)
17. खेल के पत्ते (2)
19. बचाव (2)
21. झटपट मेला में लफड़ा (3)
22. भगवान कबूतर बटर में (2)
24. तीरों का घर (4)
27. मसला में नमस्कार (3)
28. लपट भड़की तो उल्टा (3)
29. एक काला पक्षी (2)
31. दातौन देने वाला एक पेड़ (3)
32. विश्वास, यम के सिर और नमकीन की पूँछ पर (3)
33. उल्टा सीधा नाटक (3)

संकेत : ऊपर से नीचे

1. सुई की नोक का युद्ध (5)
2. मन रजा किंतु दुख का समय (4)
3. वाहन यदि मिले तो असरवाला (4)
4. खत्म करने के लिए शरीर का यह अंग लाओ (2)
6. मसखरा बताए अपना नाम (2, 2, 3)
12. तलवा नर का, उसमें बन्दर (3)
14. ..जित देखूं तित लाल (2, 2, 2, 1)
15. पेड़ पर लिपटी रहे (2)
18. बदन (3)
20. अम्ल का विपरीत भस्म (2)
23. मुसीबत का जाना (5)
25. शतक बरसे मिला पेय पदार्थ (4)
26. बिना झपकाए लगातार देखना (4)
30. हाथी का नाप (2)

वर्ग-पहेली : तीन

इस पहेली में एक कहावत और दो दोहों का प्रयोग किया गया है।



संकेत : बाएँ से दाएँ

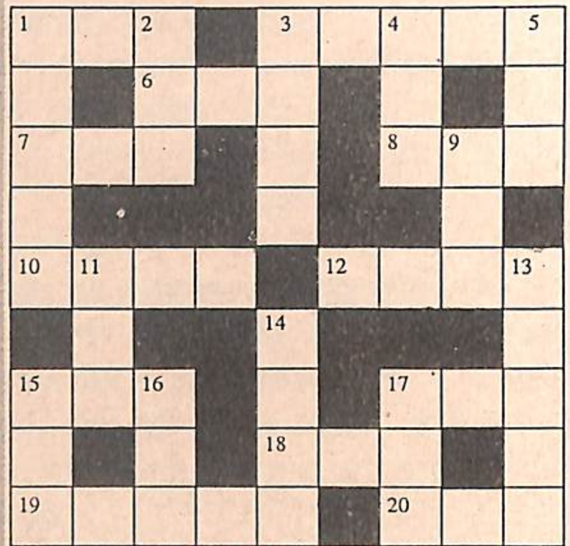
1. आज का काम कल पर मत टालो (2, 2, 1, 2, 2)
5. माँ का जाया (2)
6. यक के आगे जोड़ने से आकस्मिक (2)
8. शिष्य बेचारा दुविधा में है (4, 2, 3)
11. जान पर बन आने पर सब कुछ करना पड़ता है (3, 2, 1, 3)
14. कहते हैं देह में यह होती है (2)
15. क्या अमीर-क्या ग़रीब! यह तो सबका है (2)
18. खोजने-पाने का मुहावरा (2, 2, 2, 3)

संकेत : ऊपर से नीचे

1. शरीर की बनावट (2)
2. कभी-कभी बाज़ार में इसकी बहुत किल्लत होती है (4)
3. गीला भी और ऊँचे दरज़े का (2)
4. सप्तर्षि मण्डल का एक तारा (4)
5. मदद (4)
7. तुम्हारी दादी की छोटी बहू तुम्हारी क्या हैं? (2)
9. एक पकवान (3)
10. अच्छी तरह देखना (4)
11. जलरहित पर्वत (2)
12. दयालु (4)
13. सलोना सुन्दर (4)
16. एक मादक पौधा (2)
17. इमली का बीज (2)

वर्ग-पहेली : चार

इस पहेली में आधे अक्षर के लिए अलग भी वर्ग भी हैं, और एक वर्ग में डेढ़ अक्षर भी है।



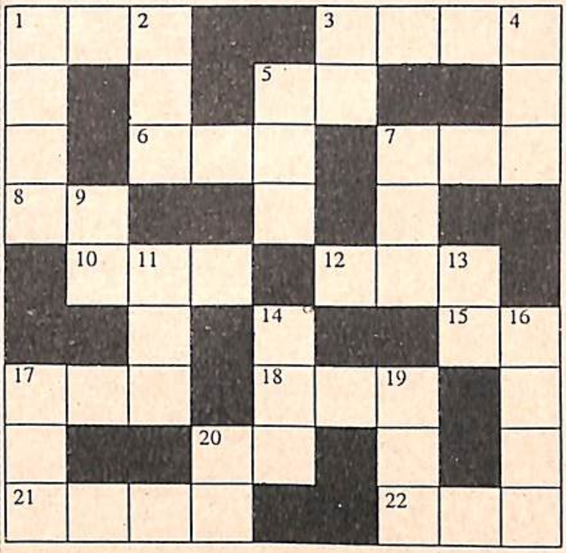
संकेत : बाएँ से दाएँ

1. पल भर के लिए (3)
3. बंदरबाँट में से क्या निकालें और क्या जोड़ें कि पानी का जहाज़ ठहरने की जगह बन जाए (5)
6. जब न कोई आवाज़, न चहल-पहल हो (3)
7. नानक दुखियारा से दोस्ती (3)
8. किसी कहानी का मुख्य पात्र (3)
10. हम भारत के क्या हैं? (4)
12. एक पत्थर और एक पत्रिका भी (4)
15. पुत्री का पति (3)
17. 1982 में भारत में हुए एशियाई खेल का प्रतीक चिन्ह (3)
18. तीतर की जाति की एक छोटी चिड़िया (3)
19. इतना बहादुर की तीस नम्बर मिलें (2, 2,)
20. बला टली की कांट-छाँट में छोटी देगची (3)

संकेत : ऊपर से नीचे

1. माफ़ी माँगना (2, 3)
2. खींचकर बाँधना (3)
3. बंधा-बंधाया रटा में सत्यानाश (4)
4. चरना में निर्माण (3)
5. कलह में है गले की नली (3)
9. यम को आधा तीर लगे तो अनाथ हो जाए (3)
11. महिमा (3)
13. डोरे से नचाए जाने वाले गुड्डे-गुड़िया (5)
14. पाकिस्तान के पूर्व प्रधानमंत्री (3, 1)
15. तेज़ औज़ार जिससे फ़सल काटी जाती है (3)
16. बाँस की चटाई (3)
17. इकाई, दहाई, सैकड़ा के क्रम में एक मानक (3)

वर्ग-पहेली : पाँच



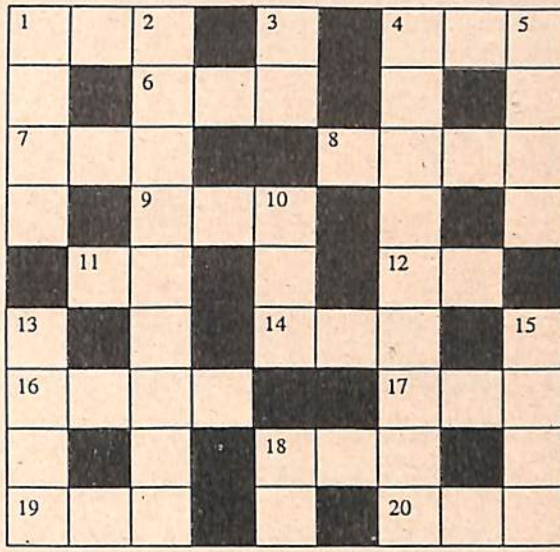
संकेत : बाएँ से दाएँ

1. मात के बाद आधा मन, दुख करना (3)
3. छाजन मतवाला में लोगों की बात (4)
5. साँप की पूँछ और गज का सिर बने, पैर (2)
6. औषधी के बाद आधा तन, (3)
7. सुस्ती (3)
8. हमारे शरीर में आक्सीजन का वाहक (2)
10. सूजी के पर्याय में ना, यात्रा शुरू करना (3)
12. भार तले देश (3)
15. इतना ही, वाहन? (2)
17. दया में सरिता का धड़, समन्दर बना देगा (3)
18. जिसकी सम्पत्ति हो (3)
20. एक पेड़ या दर्ज़न भर महीने (2)
21. इन्सान को खाने वाले (4)
22. सब नंगे हैं...में (3)

संकेत : ऊपर से नीचे

1. माल का धनी, लाल मामा (4)
2. आरामवाद में पीप (3)
3. दुनिया कहो या पानी भरने का बरतन (2)
4. सूर्य, चन्द्रमा और एक पक्षी भी (3)
5. चरित्र की गिरावट (3)
7. इज़्ज़त (3)
9. सुन्दरता का मापदंड (2)
11. एक समय का... है (3)
13. कब? (2)
14. मालक गड़बड़ है, पर है गज़ब (4)
16. आना, मिलना या भेंट (4)
17. मदन का उल्टा सीधा अत्याचार (3)
19. कल के बाद हमारा सिर झगड़ा करेगा (3)
20. गवाह (2)

वर्ग-पहेली : छह



संकेत : बाएँ से दाएँ

1. लचर-मचर में हद दरज़े का (3)
4. 'काश वह आया होता' में नील गगन (3)
6. अंतरात्मा (3)
7. पहना में शरण भी है (3)
8. उदाहरण, अरबी भाषा में (4)
9. कभी-कभी गुस्से में आँखों को इनकी संज्ञा दी जाती है (3)
11. लगन भी, स्वरों का उतार-चढ़ाव भी (2)
12. हल खींचने वाला एक पशु (2)
14. पुराने ज़माने में इनाम में दी जाने वाली ज़मीन (3)
16. जिसकी हँसी सुन्दर लगे (4)
17. चाहो तो फिसलो, चाहो तो दर्ज़ करो (3)
18. किसी चीज़ व्यक्ति के गुण-दोष पहचानना, (3)
19. दही या मही से बनने वाला एक व्यंजन (3)
20. चना खाना की उलट-पुलट में नृत्य करना (3)

संकेत : ऊपर से नीचे

1. स्वादिष्ट, मसालेदार (4)
2. इक़बाल के एक मशहूर गीत की एक पंक्ति का आधा भाग (4,2,3)
3. लेकिन भी, पंख भी (2)
4. संकेत क्रमाँक 2 की अधूरी पंक्ति को पूरा करो (3,1,2,3)
5. रात के आँसू (4)
10. तीन जा रहे थे की उलट-पुलट का परिणाम (3)
13. पृथ्वी (4)
15. जिसे काटने की आदत हो (4)
18. राह (2)

खिलता फूल - मुरझाता फूल

एक पेन्सिल जैसी आकृति देखते-देखते अगर फूल बन जाए और फिर सीधी लकड़ी रह जाए तो इसे क्या कहोगे, जादू? न भई न, इसे कलाकारी भी तो कह सकते हैं, है न! चलो इसे ही बनाते हैं। बीच में बार-बार उठना न पड़े सो ज़रूरत का सामान पहले ले आओ। सामान है - फूलवाली झाड़ू की सींक या सरकण्ड़ा, गोंद, धागा, रंगीन काग़ज़, कैंची, सफ़ेद काग़ज़, ब्लेड।

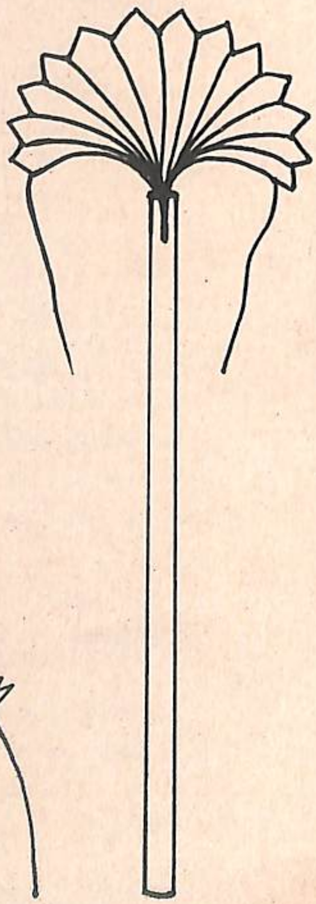
सबसे पहले रंगीन काग़ज़ की 2 इंच चौड़ी और 8 इंच लम्बी पट्टी काटकर पंखे की तरह मोड़ लो।

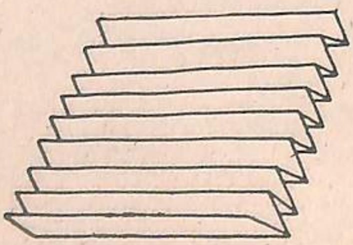
इस मुड़ी हुई पट्टी को बीच से आधा करके फिर से मोड़ लो। इसके बाद इस मुड़ी हुई पट्टी के दोनों किनारे जो अन्दर की तरफ हैं गोंद से चिपका दो।

इस पंखे के दोनों बाहरी किनारों के ऊपरी सिरे पर एक-एक छोटा धागे का टुकड़ा चिपका दो। धागे की लम्बाई पंखे की लम्बाई से कम ही रखना।

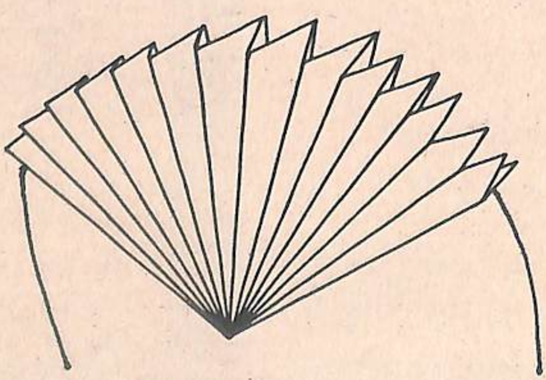
अब सींक को लम्बाई में पेन्सिल के बराबर कर लो और सींक के एक सिरे पर लगभग आधा इंच का चीरा लगा लो।

चीरा लगे इस सिरे में अपने पंखे को फँसा लो।



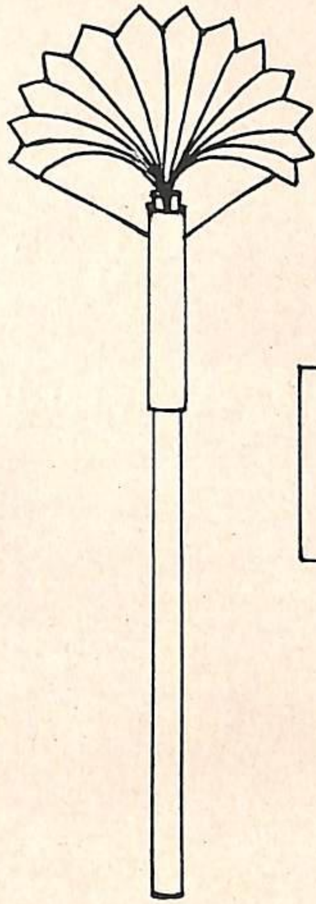


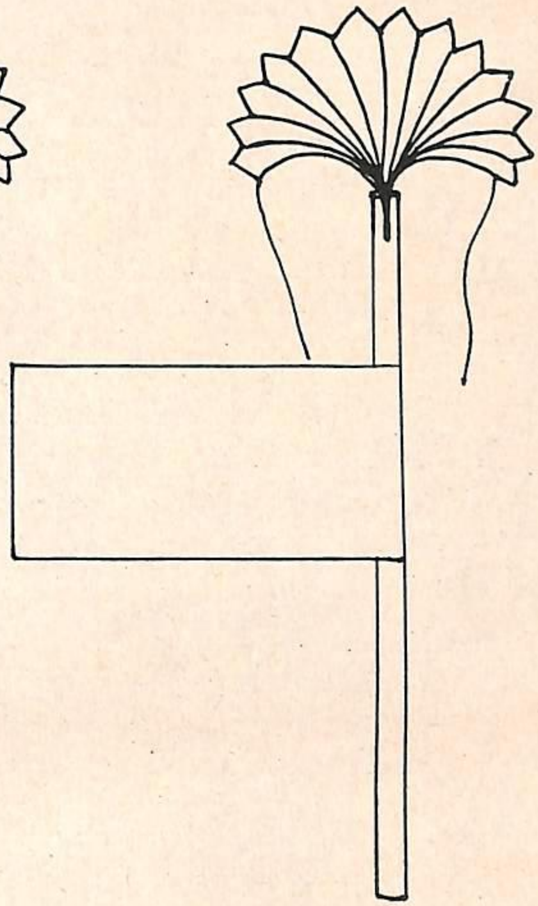




अब सफ़ेद काग़ज़ की 2 इंच चौड़ी और 4 इंच लम्बी पट्टी लेकर सींक पर लपेटो। इसके लिए काग़ज़ की पट्टी का एक सिरा सींक पर रखो और लपेटते जाओ। आखिरी सिरा आ जाए तो उसे गोंद से चिपका दो। ध्यान रखना कि काग़ज़ का यह खोल सींक पर न तो बहुत कस जाए न बहुत ढीला रह जाए।

इस खोल को सरकाकर उस जगह पर ले आओ जहाँ सींक में पंखा फँसा है। पंखे के दोनों सिरों पर बंधे धागों को काग़ज़ के खोल के दोनों तरफ चिपका लो। धागे चिपकाने के लिए एक-एक छोटे काग़ज़ के टुकड़े का इस्तेमाल करो। बस अब खोल को ऊपर नीचे सरकाओ कभी फूल खिल उठेगा और कभी बन्द हो जाएगा।





पहेलियाँ

छोटा हूँ पर बड़ा कहलाता
रोज़ दही की नदी में नहाता।

❑

एक दुकान ऐसी है जो
माल भी ले, पैसा भी ले।

❑ श्रीश मौर्य, धार

बीमार नहीं रहती
मगर खाती हूँ गोली।
बच्चे, बूढ़े और जवान
सुनकर डरते मेरी बोली।।

❑ भारत भूषण, आठवीं,
टिमरनी, होशंगाबाद

गोल-गोल सा चेहरा
पेट से रिश्ता गहरा।

❑ चंचल अग्रवाल,
चारखेड़ा, होशंगाबाद

देखी एक अनोखी रानी
गुण उसमें सबसे भारी
मरना जीना तुरत बतावे
पढ़ी नहीं पर अचरज आवे।

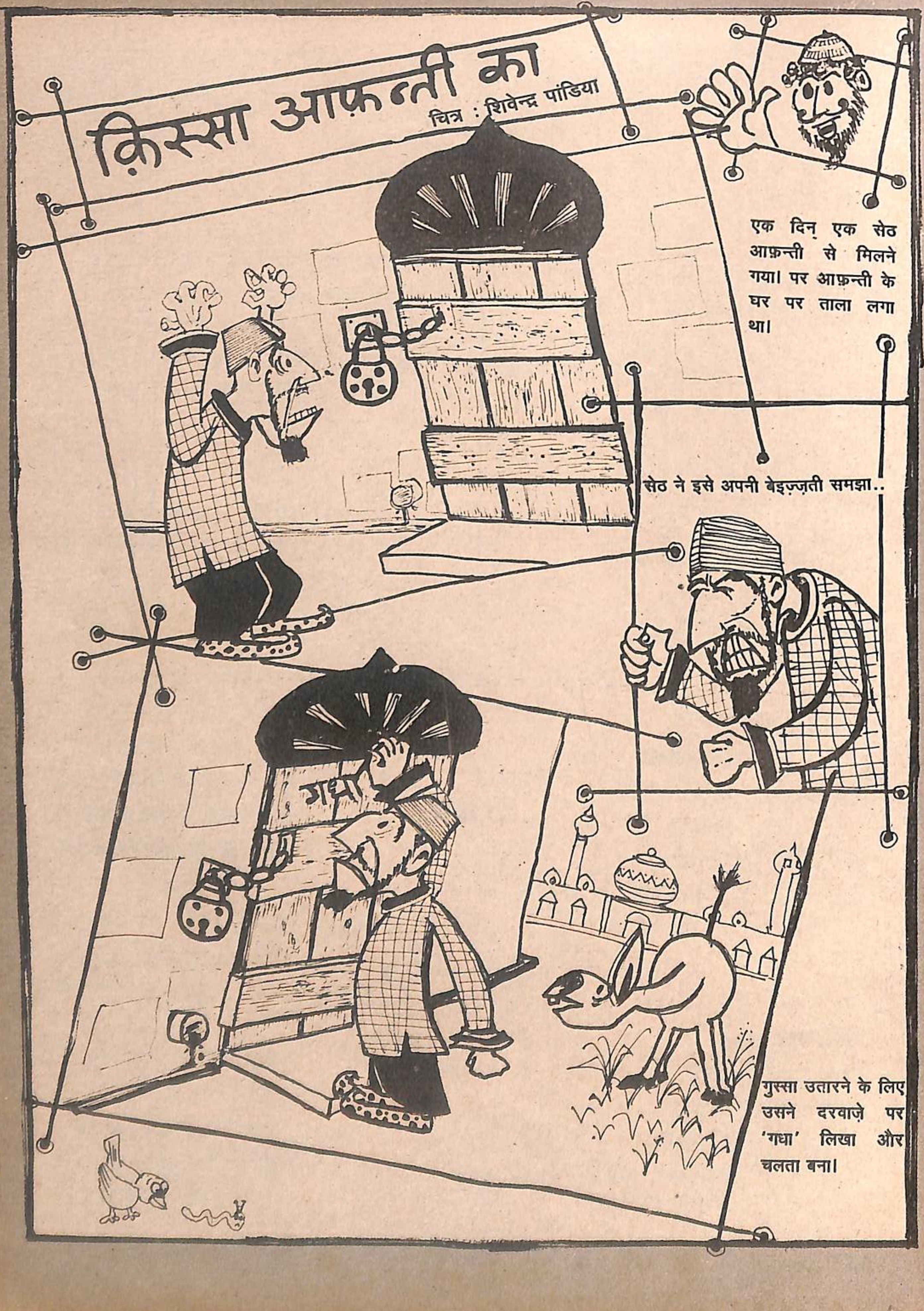
❑

लम्बी पूँछ पीठ पर रेखा
दोनों हाथ से खाते देखा।

❑ पूनम शर्मा, मुरैना म.प्र.

एक बाप के हैं दो बालक
दोनों एक ही रंग।
एक फिरे एक ठाढ़ा रहे
फिर भी दोनों संग।।

❑ नीतू जैन, गोपालगंज, सागर


क़िस्सा आफ़न्ती का
चित्र : शिवेन्द्र पांडिया
एक दिन् एक सेठ आफ़न्ती से मिलने गया। पर आफ़न्ती के घर पर ताला लगा था।
सेठ ने इसे अपनी बेइज़्ज़ती समझा..
गधा
गुस्सा उतारने के लिए उसने दरवाज़े पर 'गधा' लिखा और चलता बना।


आफ़न्ती जब लौटकर आया तो दरवाज़े पर 'गधा' लिखा देखकर उसका माथा ठनका...
गधा
आख़िर किसकी हो सकती है यह हरकत....
अगले दिन बाज़ार में.....
कल आप मेरे घर आए थे! माफ़ करें मैं घर पर नहीं था!
तुम्हें कैसे पता?
आप दरवाज़े पर अपने दस्तख़त जो कर गए थे!

रबर

रबर को तो शायद तुम सब अच्छे से पहचानते हो, पर उसके पेड़ के बारे में शायद न जानते हो। रबर का पेड़ दक्षिण अमेरिका का मूल निवासी है। ऐसा कहा जाता है कि कोलम्बस इसे अमेरिका से यूरोप ले गया था। अब तो भारत के अलावा म्यांमार (बर्मा), जावा, श्रीलंका, आदि कई देशों में रबर का पेड़ उगाया जाता है।



भारत में यह पेड़ असम, तमिलनाडु, कर्नाटक में ख़ासतौर पर उगाया जाता है। देश के अन्य हिस्सों में भी थोड़ी मात्रा में इसे उगाया जाता है।

रबर का पेड़ हमेशा हरा रहने वाला, घना और सुन्दर दिखने वाला पेड़ है। इसकी ऊँचाई 100 से 120 फुट तक होती है। इसके पत्ते 5 से 10 इंच तक लम्बे होते हैं। पत्ते अण्डाकार होते हैं और चमड़े जैसे लगते हैं। पत्तों में बीच की शिरा उभरी रहती है। ये गहरे हरे रंग के होते हैं। पेड़ की छाल भूरी, कत्थई-से रंग की होती है। लेकिन छाल के नीचे की लकड़ी सफ़ेद और हल्की भूरी होती है। फल छोटा होता है और एक फल में तीन बीज होते हैं।

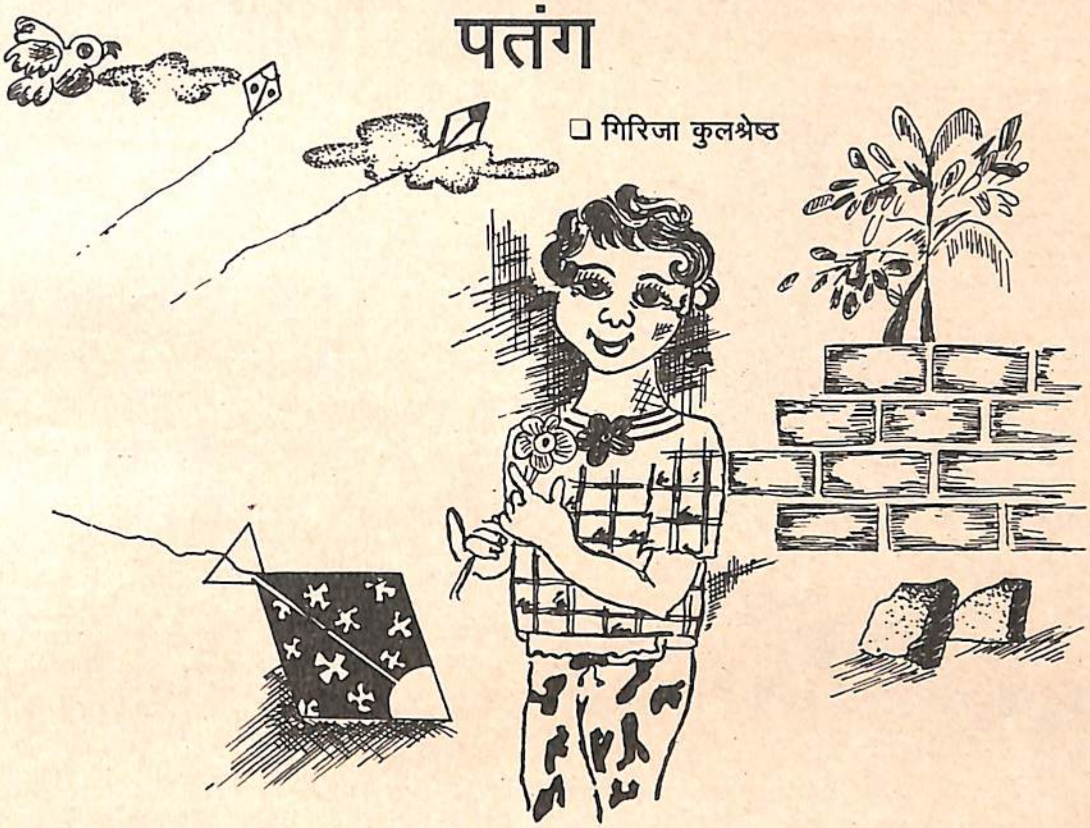
रबर का पेड़ कलम लगाकर या बीज बोकर दोनों तरीक़ों से उगाया जा सकता है। वैसे बीज से उगाया पौधा ज़्यादा अच्छा होता है। असम में इसे जून से सितम्बर तक यानी बरसात के मौसम में बोया जाता है। बीज को फूटने में एक से दो हफ़्तों का समय लगता है। एक से दो फुट तक के पौधे बनने तक इन्हें नर्सरी में रखा जाता है, उसके बाद इन पौधों की रोपाई करके जंगल लगाए जाते हैं। अधिक पुराने पेड़ में डालियों से लटकने वाली जड़ें (बरगद की तरह) निकल आती हैं।

रबर के पेड़ का सबसे मुख्य उपयोग रबर बनाने में ही होता है। वैसे इसे सजावटी पेड़ की तरह भी लगाया जाता है। रबर इसके तने से निकले हुए दूध जैसे द्रव से बनती है। इस द्रव को पेड़ के तने पर V आकार के कट लगाकर निकालते हैं। पेड़ की उम्र पाँच वर्ष की होने पर ही उससे यह द्रव प्राप्त किया जाता है। आमतौर पर तीन साल में एक बार यह दूध निकाला जाता है।

रबर के पेड़ कई जातियों के होते हैं। अलग-अलग जाति के पेड़ से अलग-अलग किस्म की रबर बनती है। और उसका उपयोग भी अलग-अलग होता है। भारत में पाई जाने वाली जाति फाइकस इलास्टिका (Ficus Elastica) है। यह भारत में सभी जगह मिलती है। कुछ जगहों पर इससे रबर भी बनाई जाती है, लेकिन आमतौर पर इसे सजावटी पेड़ की तरह ही लगाया जाता है। वैसे सबसे अच्छी किस्म की और सबसे ज्यादा मात्रा में रबर देने वाली जाति है हीविया ब्रेसीलिएनसिस (Hevea Brasiliensis)। ❑❑

पतंग

❑ गिरिजा कुलश्रेष्ठ

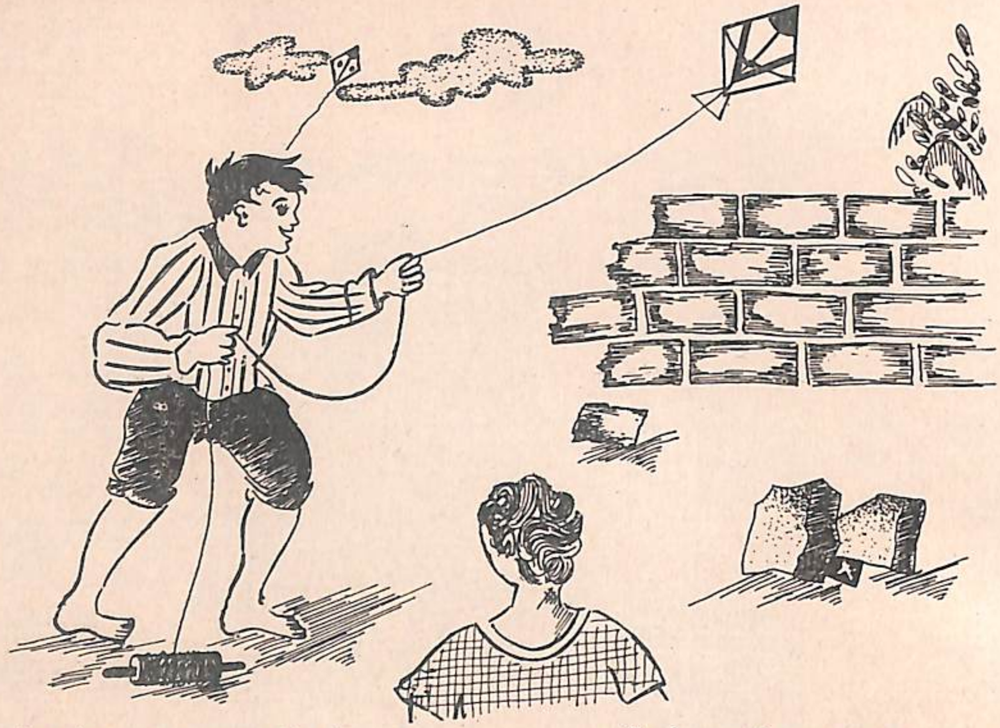


सूरज अपने मन में पतंगों की जितनी रंगीन व मीठी कल्पनाएँ संजोया करता था, उसके पिता उतनी ही कड़वाहट के साथ पतंग उड़ाने वाले लड़कों की आलोचना किया करते थे। वे इसे उजड्ड व बैठे-ठाले लोगों का काम और पतंग के शौकीन लड़कों की पढ़ाई का भविष्य निन्यानवे प्रतिशत अन्धकार में डूबा मानते थे। साथ ही कहते, "हमारा सूरज नहीं उड़ाएगा कभी पतंग। उसे तो एक अच्छा विद्यार्थी बनना है।"

'अच्छी ज़बरदस्ती है।' सूरज सहमकर अपनी पतंग विषयक लालसा को गहराई में दबा देता। पापा की नज़रों में अच्छे बने रहना भी एक मजबूरी है। हालाँकि वह इच्छाओं को जितना दबाता वे उतनी ही ताकतवर होकर उभरतीं।

एक दिन आसमान में लहराती रंग-बिरंगी पतंगों में से एक पतंग कटकर उसकी छत पर आ गिरी। तब एक बार फिर उसकी पतंग उड़ाने की इच्छा ने सिर उठाया। पापा पतंग उड़ाने की मनाही करते हैं, पर पापा को बताना भी क्या ज़रूरी है? डम्पी भी अपने घरवालों से छुपकर रोज़ मोरपंख ढूँढने बाग में जाता है। हालाँकि घर वाले मना करते हैं। वह भी पतंग बाज़ार से ख़रीदकर तो लाया नहीं है। पतंग जादुई परी की तरह उसके मन की बात जानकर ख़ुद ही उसके पास आई है। इस तरह हाथ से जाने देना कहाँ की समझदारी है।

सूरज ने पतंग को एक पत्थर के पीछे छुपा दिया। तब उसे यह नहीं पता था कि पतंग शेरू की है। पर जब शेरू पतंग को माँगने ही आ गया तो उसने अपना मन मज़बूत बना लिया। दरअसल शेरू सूरज से कई बातों में आगे है। वह कहीं भी खेल सकता है। नदी में तैर सकता है। घण्टों साइकिल चला सकता है। और वक्त पड़े तो एक तमाचे का जवाब दो तमाचों से भी दे सकता है। घरवालों की ओर से पूरी छूट है। वे कभी भी अकेले शेरू को दोषी नहीं ठहराते। इतना सब करने का साहस यों तो सूरज में भी है। पर सूरज के पापा उसके बिगड़ने के डर से हर समय टोकते हैं। इसलिए शेरू से वह भीतरी तौर पर काफ़ी अलगाव महसूस



करता है। शेरू के भाव ज़्यादा ऊँचे हैं। तभी वह कटी पतंग को भी बेधड़क माँगने चला आया। माँ ने भी जैसे उसका मन रखने (उसका मन सभी रखते हैं) सूरज से कह दिया, "पतंग तुम्हारे पास हो तो दे दो बेटा... तुम करोगे भी क्या? पापा तुम्हारे लिए इतनी अच्छी-अच्छी चीज़ें लाते हैं।"

सूरज के मन में किसी वीर का-सा भाव पैदा हुआ, अच्छी चीज़ें नहीं केवल पतंग... हाँ मुझे पतंग चाहिए ही ... किसी भी कीमत पर, यह पतंग शेरू नहीं किसी भी लाट साहब की हो, तो भी मैं नहीं दूँगा। हरगिज़.... हरगिज़ नहीं दूँगा।"

पर अगले ही क्षण उसे ध्यान आया कि वीर तो सच बोलकर ख़ून ख़राबा करते थे। प्राण तक दे डालते तब भी उन्हें जीत मिलती न मिलती। पर विदेशी तो ज़रा-सी हेराफेरी से बड़े-बड़े राज्यों पर अधिकार कर लेते थे। न खून-ख़राबा होता था न कोई फसाद। क्या सूरज शब्दों की थोड़ी बहुत हेराफेरी करके छोटी-सी पतंग का मालिक नहीं बन सकता?

उसने बड़ी सफ़ाई से कह दिया, "कौन-सी पतंग? कैसी पतंग? मैंने तो कोई पतंग नहीं देखी। मैं उसका करता भी क्या? पतंग तो मुझे वैसे भी अच्छी नहीं लगती।"

माँ को उसकी बात पर विश्वास हो गया। यों भी दो-एक बार बड़े गम्भीर अवसरों पर वह सच बोलने का प्रमाण दे चुका है। बुआ के यहाँ जाने वाले मिठाई के डिब्बे में से चार लड्डू कम हो जाने पर माँ ने तीनों बच्चों पर शक किया। पर सूरज ने उन्हें खाना स्वीकार करके सबको हैरान कर दिया। हालाँकि उसे यह दुख हुआ कि सच बोलने पर शाबाशी किसी ने नहीं दी। उल्टे एक भद्दा-सा नाम दे डाला - चटोरा।

शेरू मुँह लटकाकर लौट गया। हालाँकि वह कुछ ऐसी नज़रों से सूरज को देखता गया जिसका साफ़ अर्थ था 'उनकी दोस्ती की समाप्ति'। सूरज ने इसे ज़्यादा महत्व नहीं दिया। शेरू से उसकी दोस्ती थी ही कब। केवल कॉपियों के लेन-देन की बात थी, सूरज उसे ज़रूरी नहीं समझता। उस समय तो वह खुश था। बड़े आसान तरीक़े से उसने एक क़ामयाबी हासिल कर ली थी।

शेरू दूसरे दिन नई पतंग ले आया और सूरज को दिखाकर उड़ाने भी लगा। पर सूरज अभी तक पत्थर के पीछे से पतंग को नहीं हटा पाया था और वह जगह पतंग के लिए सुरक्षित नहीं थी। नीटू 'किल किल कोटे' की लकीरें खींचने कभी भी पत्थर को पलट सकता था। नीटू से सूरज की कम

पटती है इसलिए उससे पतंग के छुपाव की आशा करना बेकार ही था। जबकि पतंग को अभी छुपाना बहुत ज़रूरी था। फिर कभी मौका पाकर उड़ाने की योजना भी बनानी थी। उसके लिए कोई भरोसेमन्द साथी भी ढूँढना था।

काफ़ी विचार करने के बाद सूरज को पतंग के लिए बैठक में लगी बड़ी तस्वीर के पीछे सही जगह लगी। वहाँ न नीटू के शरारती हाथ पहुँच सकते थे न पापा की तेज़ नज़र। गुलकी उसके कामों की ज़्यादा छानबीन नहीं करती न किसी काम में दखल देती। लेकिन पतंग छुपाने से पहले पहला मोर्चा उसी से लेना पड़ा। जैसे ही सूरज अख़बार के बीच पतंग को लेकर बैठक में पहुँचा गुलकी मानो उसी का इन्तज़ार कर रही थी। देखते ही चहक उठी, "तुम आ गए भैया? लो, मेरे लिए इन कागज़ों से फूल बना दो। कल गुलदस्ता बनाकर स्कूल ले जाना है।"

सूरज वैसे गुलकी का हर काम कर देता है, फूल बनाना तो उसका शौक है। पर उस समय यह फ़रमाइश सूरज को बेवक्त की रागिनी लगी। सो टालने की गरज़ से बोला, "गुलकी इस समय मैं ज़रा व्यस्त हूँ। तू ऐसा कर कुछ देर मिनी के यहाँ खेल आ। वह तुझे बुला भी रही है।"

"वह तुम्हें कहाँ मिली भैया। वह तो कल ही बुआ के यहाँ चली गई।" गुलकी ने आश्चर्य से कहा।

"ख़ैर परसों मिली होगी।" सूरज ने बात सम्हाली, "तू जा माँ को बुला ला।"

"क्यों माँ से क्या काम है?"

"काम है, बहुत ज़रूरी है, तू जा तो सही।" सूरज गुलकी को किसी तरह जल्दी से जल्दी टालना चाहता था पर वह अड़ गई।

"पहले काम बताओ फिर जाऊँगी, मेरे फूल तो बनाते नहीं। लगे हैं बहलाने।"

"देख गुलकी," सूरज ने प्यार से समझाया। धमकाने से बात बिगड़ सकती थी। "तू अगर बड़े भाई का कहना मान लेगी तो तेरे फूल इतने सुन्दर बनेंगे कि सब देखते रह जाएँगे ..... नहीं तो... एक फूल नहीं बनेगा हाँ...."

फूलों के लालच में गुलकी चली गई। सूरज ने चैन की साँस ली। पर अभी पतंग रखकर वहाँ से हट भी नहीं पाया कि नीटू जी आ धमके और आते ही सीधा सवाल जड़ दिया, "तुमने वहाँ क्या छुपाया है भैया?"

'कमाल है' सूरज ने सोचा यहाँ हर कोई सूरज के पीछे जासूस बना हुआ है। अभी गुलकी से जैसे-तैसे पीछा छुड़ाया कि यह महाशय छानबीन करने लगे। झल्लाकर, कहा, "हाँ छुपाए हैं, बड़े-बड़े लड्डू।"

"लड्डू", नीटू की आँखे बिल्ले की तरह चमकीं, "तब तो मैं ज़रूर ही देखूँगा।"

यह कहकर वह पलंग पर चढ़ गया और ताक पर पैर रखकर तस्वीर तक पहुँचने की कोशिश करने लगा। सूरज ने परेशान होकर नीटू को देखा। यह उसकी सीमा का अतिक्रमण था। क्या उसकी इतनी हैसियत नहीं कि अपने आप को 'अलग' रख सके। क्या वह कमज़ोर है। नीटू व गुलकी को अगर पापा का समर्थन है तो वह भी किसी से कम नहीं। वह क्या करके नहीं दिखा सकता? वह किसी से डरता नहीं है। पापा से भी नहीं। यह नीटू तो चीज़ ही क्या है?

इतना सोचते ही उसने नीटू के दोनों हाथ पकड़कर झटका दिया। वह नीचे फ़र्श पर गिर पड़ा और चीख मारकर रोने लगा। चीखें चोट से नहीं बल्कि सूरज की पिटाई के उद्देश्य से तेज़ होती जा रही थीं। इसे सूरज भी जानता था। पर उसे कोई परवाह नहीं थी। वह नीटू से कमज़ोर किसी भी हालत में नहीं रहना चाहता था। शाम को पापा ने उसकी खूब खिंचाई की, "इतना बड़ा हो गया। इसे इतनी तमीज़ भी नहीं कि छोटे भाई-बहिन से कैसा बर्ताव किया जाता है। दिनों-दिन ढीठ और अशिष्ट होता जा रहा है।"

सूरज को पता था कि पापा उसको ही दोष देंगे इसलिए उस पर इन बातों का ज़्यादा असर नहीं हुआ। चुपचाप सुनता रहा। अगर वह कहता तो सिर्फ़ इतना ही कि, "इस तरह की लड़ाई पर या उन्हें कोई चीज़ देने के लिए तो पापा उसे 'बड़ा' कह देते हैं। पर अगर साइकिल चलाने की बात हो,

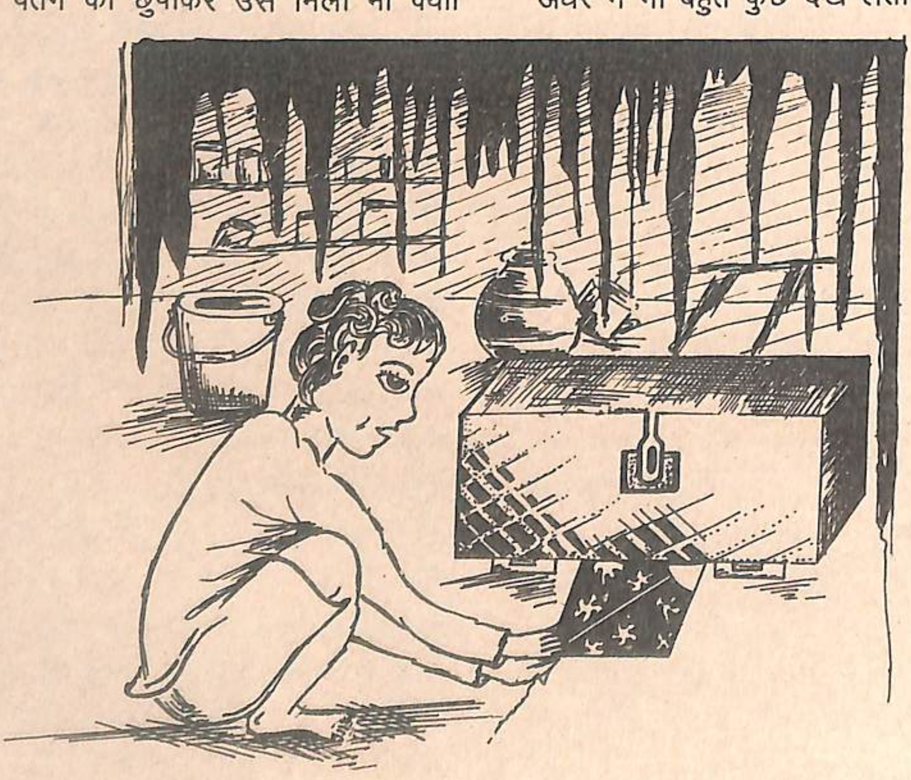
बाज़ार जाने की बात हो या फिर अपनी कोई राय देनी हो तो फौरन उसे 'छोटा' कहकर चुप कर दिया जाता है। पता नहीं उसकी इस तरह मनचाही खींचतान क्यों की जाती है?"

उस दिन के बाद नीटू स्पष्ट रूप से सूरज का विरोधी बन गया। सूरज के पेड़ पर चढ़ने वाली बात तथा तस्वीर के पीछे कुछ छुपाने वाली बात को पापा से कह डालने की धमकी जब तब दे डालता। गुलकी को उसने अपने साथ मिला लिया। वे दोनों साथ ही खाते, साथ ही खेलते तथा सूरज को सुना-सुनाकर बड़ी योजनाएँ बनाते। सूरज बहुत अकेला पड़ गया।

पतंग भी उसे अब बोझ लगने लगी क्योंकि अकेले उसने कभी कुछ नहीं छुपाया था। नीटू को उस पर शक हो ही गया था। घर में अब दूसरी जगह नहीं थी जहाँ किसी का दखल न हो। केवल अन्दर वाले कमरे में सन्दूक के नीचे ज़रूर सुरक्षित जगह थी। पर उसमें ज़्यादातर अंधेरा रहता था। एक-दो बार साँप भी निकल चुका था। यों सूरज साँप-बिच्छुओं से डरता नहीं, पर पतंग के पीछे प्राणों को संकट में डालना उसे ज़रूरी नहीं लगा।

फिर पतंग को छुपाकर उसे मिला भी क्या। उड़ा तो सकता नहीं था, छुपाने की उल्टी समस्या ही थी। शेरू को भी शक है। उसने दो-एक लड़कों से कहा भी है कि सूरज ने पतंग के लिए झूठ बोला। सूरज को लगा कि पतंग वाला झंझट उसने व्यर्थ ही मोल ले लिया था। पर उससे छुटकारा इतना आसान नहीं था। शेरू को लौटाने से रहा और घरवालों को बताकर उनका विश्वास खोना भी ठीक नहीं था। फिर क्या करे। यों तो पतंग को फाड़कर फेंकने या जलाने से भी सारी कहानी ख़त्म की जा सकती थी पर सूरज को यह बुज़दिली लगी। क्या इस तरह हार मानने के लिए ही उसने पतंग छुपाई थी? अब तो, उसे अच्छी तरह छुपाना, फिर मौक़ा पाकर उड़ाना - दो ही लक्ष्य सूरज के सामने थे। और इन्हें पाने के लिए वह कुछ भी कर सकता था। पतंग चाहे अन्दर वाले कमरे में ही क्यों न छुपानी पड़े। साँप - बिच्छू क्या हर समय बैठे रहते होंगे? और अंधेरे से सूरज डरता नहीं।

मौक़ा पाकर सूरज अन्दर वाले कमरे में पतंग लेकर गया। बाहर से कमरे में जो अँधेरा दिखता था अन्दर था नहीं। असल में अभ्यस्त होने पर आँखें अँधेरे में भी बहुत कुछ देख लेती हैं। सन्दूक पुराना



था और ईंटों पर रखा था। नीचे खाली जगह में सूरज ने हाथ बढ़ाकर पतंग को सरका दिया। यहाँ तो कोई पतंग के बारे में सोच भी नहीं सकता। वैसे कमरे में कोई ज़्यादा आता-जाता नहीं था। क्योंकि दैनिक जीवन का कोई सामान उसमें नहीं था। बस माँ ज़रूर रोज़ झाडू लगाती थी। पर सन्दूक के नीचे तो वह भी हाथ नहीं डालती।

सूरज ने पतंग को और अन्दर करने के लिए हाथ बढ़ाया पर अज्ञात आशंका से उसने जल्दी व ज़ोर से हाथ खींचा तो सन्दूक की तली में निकली हुई धारदार पत्ती उसकी कलाई को गहराई से चीरती हुई निकल गई। खून की धारा फूट पड़ी। पीड़ा से वह तड़प उठा। जल्दी से दौड़कर जो कपड़ा मिला उसने हाथ पर बाँध लिया। लेकिन यहाँ-वहाँ गिरी खून की बूँदें देखकर उसके होश उड़ गए। पीड़ा या घाव से नहीं, बल्कि पापा के डर से। चोट लगने या गिरने पर वो प्यार व सांत्वना की जगह उल्टे डाँटते हैं। एक बार पेड़ से उतरते समय गिर गया, पैर में मोच आ गई तो पापा ने सबके सामने दो चाँटे और लगाए। कहा, "ऐसे लड़कों को तो इससे भी ज़्यादा सज़ा मिलनी चाहिए।"

बिस्तर में पड़े-पड़े उसे यही चिन्ता सता रही थी कि इस घाव को वह छुपाए कैसे। पीठ, पेट या जाँघ का घाव वह आसानी से छुपा सकता था, छुपाए भी थे। पर कलाई पर.... सहसा उसे ध्यान आया कि उसे पूरी बाँह की शर्ट पहन लेनी चाहिए। उसने चादर ओढ़े ही माँ से नई शर्ट माँगी।

"नई शर्ट की क्या ज़रूरत पड़ गई सूरज? कहीं जाना तो है नहीं," माँ ने आश्चर्य से कहा। सूरज की समझ में नहीं आया कि क्या जवाब दे, उसने बिना सोचे कह दिया, "ज़रा सर्दी लग रही है।"

"सर्दी," माँ ने चौंककर देखा, "सर्दी का तो मौसम है ही नहीं। कहीं तुझे बुखार तो नहीं?"

"नहीं बुखार-उखार कुछ नहीं है, बस यूँ ही।"

"होगा भी तो क्या तू बताएगा", माँ ने आकर कहा। फिर चादर हटाकर बुखार देखने के लिए वही हाथ पकड़ लिया। लाख छुपाने पर भी सूरज की कराह निकल गई।

"क्यों? क्या हुआ? अरे इस हाथ में क्या हो गया है?" माँ ने कपड़ा खोल डाला।

"अरे राम... खून! सूरज यह तो बहुत लग गई। तुझसे कितनी बार कहा है, ज़रा सम्हलकर रहा कर, पर तू किसी की सुनता है? मैं तो बहुत तंग आ गई।"

"ज़रा-सी चोट है माँ!" सूरज ने बहादुरी दिखाई, "तुम तो ऐसे घबरा रही हो जैसे किसी का कत्ल हो गया हो। सब ठीक हो जाएगा।"

"ठीक तो होगा बाद में। पहले यह बता कि इतनी लगी कैसे?"

"छोड़ो भी माँ, लग तो गई ही। अब पूछताछ करने से फ़ायदा भी क्या है। हाँ इतना करना कि पापा को मत बताना वरना वो परेशान होंगे। खामखाँ बात का बतंगड़ बनेगा।"

माँ घाव की दवा पट्टी करती रही तथा ध्यान से सूरज की बात सुनती रही। फिर गहरी नज़रों से उसे देखती चुपचाप चली गई।

दो-तीन दिन बाद सूरज को उसके पापा ने बुलाया। जाते समय उसका दिल काँप रहा था। पापा हमेशा किसी बात पर डाँटने या शिकायत करने ही बुलाया करते हैं। ज़रूर हाथ के घाव का उन्हें पता चल गया है। अब जो भी होगा देखा जाएगा। उनसे बचकर भागा तो जा नहीं सकता।

लेकिन सूरज की सारी आशंकाओं के विपरीत पापा ने उसे प्यार से अपने पास बिठा लिया। उसका हाल-चाल पूछा सूरज हैरान था। उसे संकोच भी हो रहा था। डाँट-फटकार के सामने हमारा मन विद्रोह का बिगुल बजा देता है लेकिन प्यार के दो बोल मन के अन्दर सब कुछ पिघला देते हैं। अस्थिर कर देते हैं। फिर सिर पर हाथ फेरकर उन्होंने एक अप्रत्याशित प्रश्न पूछा, "पतंग उड़ाने की बहुत इच्छा होती है सूरज?"

सूरज इस प्रश्न के लिए तैयार न था। सकपका गया, "न.. नहीं तो पापा...." उसकी समझ में यह नहीं आया कि किस विषय की भूमिका थी। पापा तो हमेशा पतंगों की आलोचना करते हैं फिर पतंग के बारे रुचि-अरुचि पूछने का मतलब?

शायद मन की ले रहे हैं। सो वह भी मजबूती से बोला, "सच, पापा मैं तो पतंग का कभी नाम भी नहीं लेता।"

"नाम तो बेशक नहीं लेते।" पापा हल्के से मुस्काए "लेकिन पतंग के पीछे अपने आपको भी भुला देते हो। है ना?"

"न... नहीं तो पापा...." सूरज ने कठिनाई से थूक निगला।

"डरपोक", पापा ने हल्की-सी चपत लगाई। फिर माँ को बुलाया। सूरज हैरान था। पापा उसे डरपोक किस आधार पर कह रहे हैं, वह तो बड़े-बड़े खतरों से नहीं डरता। कितने ही साँप-बिच्छुओं को वह मौत के घाट उतार चुका था। अंधेरे में भी जहाँ गुलकी व नीटू जाने में डरते हैं वहाँ सूरज जाता है। फिर भी....? तभी माँ शेरू वाली पतंग लेकर हाजिर हो गई। सूरज को जैसे किसी ने सरेआम बेनकाब कर दिया हो। वह सिर झुकाकर रह गया।

"यह पतंग वही है ना जिसके पीछे तुम अंधेरे कमरे में गए, न साँप से डरे न किसी और घटना से?"

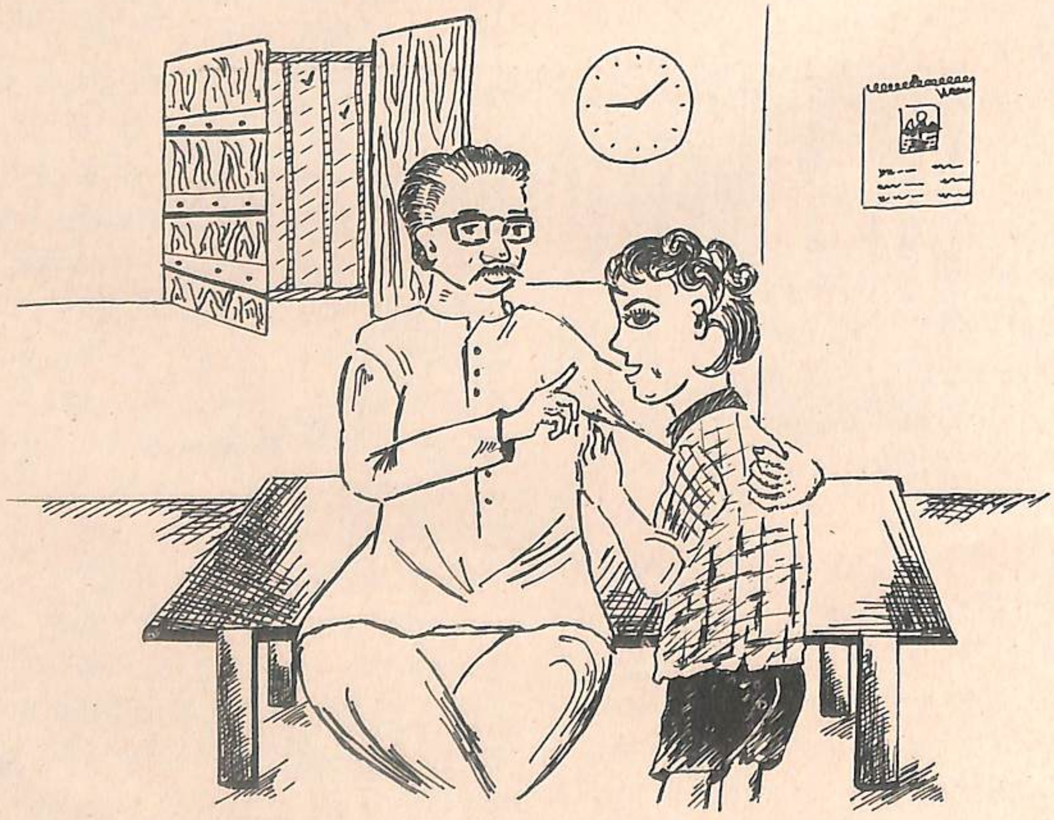
"जी..?... नहीं।" सूरज हाँ और न के बीच में बोला।

"तभी तो मैंने तुम्हें डरपोक कहा। जो अपने मन की बात को कह नहीं पाता वह डरपोक तो है ही। सबसे बड़ा डरपोक। अरे पतंग का इतना शौक था तो मुझसे कहा होता। मैं एक से एक अच्छी पतंग ला देता। कोई समझे या न समझे, सुने या न सुने। सच कह डालने में कोई हर्ज नहीं। बल्कि कहना ही चाहिए।"

यह कहकर पापा ने दो ख़ूबसूरत पतंगें निकालकर सूरज को दे दीं"। पतंगों का विरोध ज़रूर करता हूँ पर उतना नहीं कि मेरे बेटे में से सच बोलने का हौसला ही जाता रहे।"

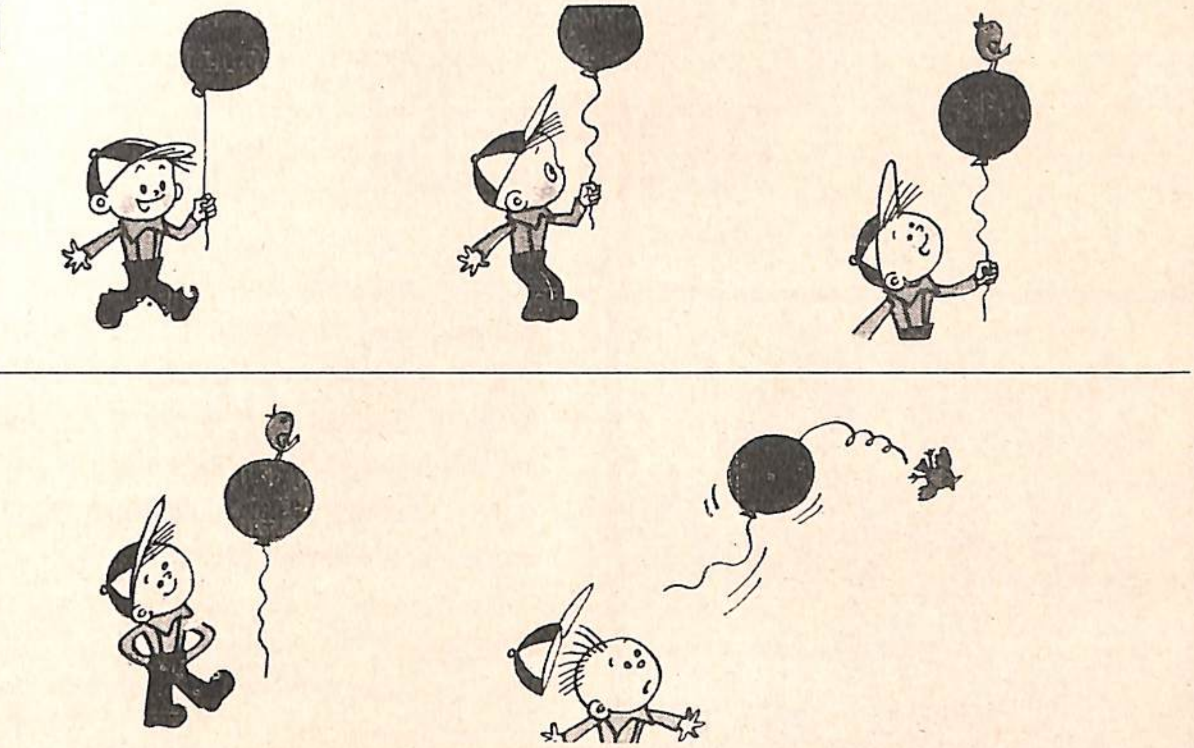
सूरज ने पापा के चेहरे को देखा आँखों में प्यार था, विश्वास था, कहीं भी आशंका, क्रोध या व्यंग्य नहीं था। सूरज के अन्दर जैसे कुछ पिघलकर बाहर आ गया। दोनों पतंगों को एक ओर फैंककर वह पापा से लिपट गया। अब उसे पतंगों की तमन्ना नहीं थी। उसे पतंगों से भी ज्यादा अच्छी चीज़ मिल गई थी -'पापा का प्यार'। ❑❑

सभी चित्र : संगीता भार्गव

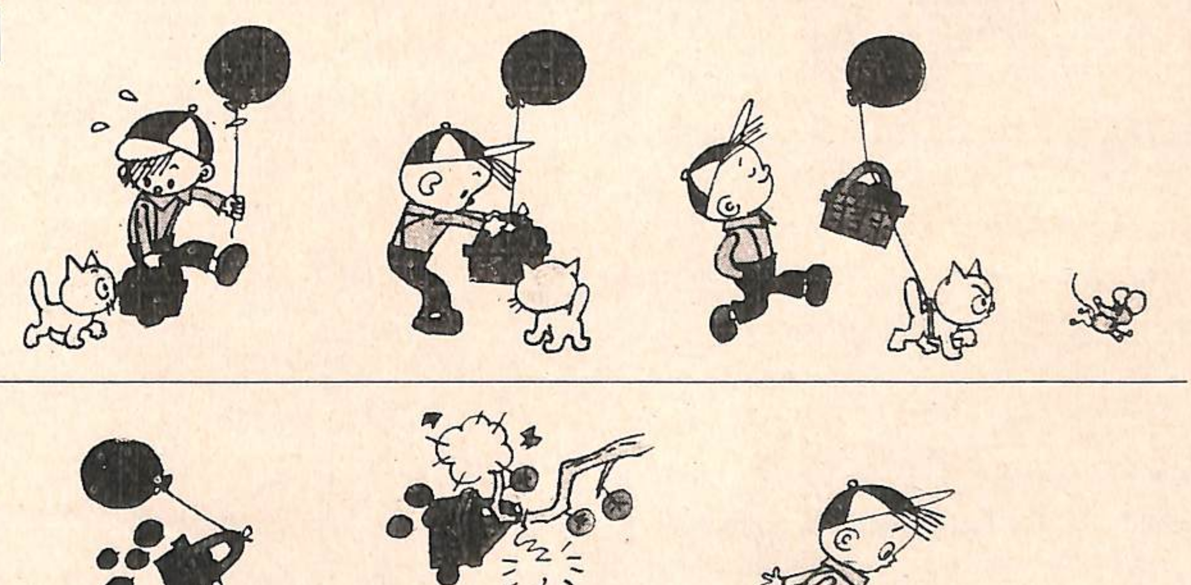


गुब्बारे की करामात

1



2



('लिटिल कार्टून्स' से साभार)



माथापच्ची

(1)



एक चित्रकार कुछ तितलियों/ इल्लियों के चित्र और पानी में उनके प्रतिबिम्ब के चित्र बना रहा था। हमेशा की तरह उसमें कुछ गलतियाँ रह गईं। क्या तुम ढूँढ सकते हो? कितनी ढूँढ पाए?

(2)

तनु साइकिल पर स्कूल जा रही थी। दो-तिहाई रास्ता जाने के बाद साइकिल पंक्चर हो गई। तब बाकी रास्ता उसने पैदल तय किया। उसे जितना समय साइकिल पर आने में लगा था उसका दुगुना समय पैदल चलने में लगा।

बता सकते हो पैदल चलने की बनिस्बत साइकिल चलाते समय उसकी गति कितनी अधिक थी?

(3)

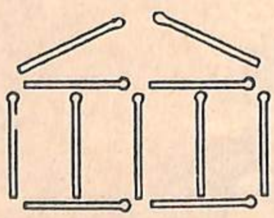
इन्दौर से भोपाल के लिए हर आधे घण्टे में एक बस रवाना होती है। उधर भोपाल से भी इन्दौर के लिए हर आधे घण्टे में एक बस छूटती है। दोनों को ही अपना सफ़र पूरा करने में पाँच घण्टे लगते हैं। अब बताओ इन्दौर से आने वाली कोई एक बस को रास्ते में भोपाल से आने वाली कितनी बस मिलेंगी? क्या जवाब ग्राफ बनाकर दिखा सकते हो?

(4)

नीचे दिए वाक्यों में राज्यों के नाम छिपे हैं, ढूँढकर निकालो तो-

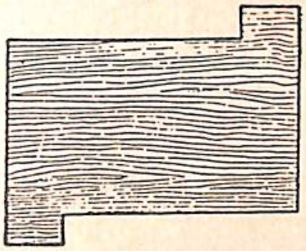
1. चौड़ा पंजा बलवान का होता है।
2. देखो उड़ी सात रंग की पतंग।
3. जागो वामा बच्चा रो रहा है।
4. यह मणि पुरखों की निशानी है।
5. रोमि ज़ोर मत लगा।
6. अलगु जरा तराजू तो लाना।
7. गत रात्रि पुराण वाचन हुआ।

(5)



यहाँ माचिस की 11 तीलियों से एक घर का चित्र बना है। क्या तुम सिर्फ़ 2 तीलियाँ हटाकर कुछ ऐसा कर सकते हो कि घर की जगह चित्र में हमें 11 वर्ग मिलें?

(6)



घर में बढ़ई काम कर रहा था। जब उसका काम खत्म हो गया तो मैंने देखा लकड़ी के कई सारे आड़े-टेढ़े टुकड़े बचे हुए हैं। उन सबसे मैं अपने लिए कुछ-न-कुछ बना लेना चाहती थी।

एक टुकड़ा चित्र में दिखाए आकार का था। बहुत दिनों से इच्छा थी कि शतरंज खेलने के लिए लकड़ी की एक बिसात बनवाई जाए। नाप-जोखकर जब मैंने इस पटिए पर 64 बराबर वर्गों के निशान लगाए तो पटिए के निकले हुए हिस्सों में भी 2-2 वर्ग आ रहे थे। यानी पटिए को दो, एक से टुकड़ों में काटकर वापस ऐसे जोड़ना था कि वह 64 वर्गों का एक बड़ा वर्ग बन जाए। सोच सकते हो कैसे टुकड़ों में काटा होगा मैंने उसे!

(7)

यह अजीब इत्तफ़ाक है कि नीना की दादी के गाँव से नीना की नानी के गाँव तक कुल छह रेलवे स्टेशन हैं और वे सभी बराबर-बराबर दूरी पर हैं। अब तुम बताओ कि पहले स्टेशन से छठवें स्टेशन के बीच की दूरी की तुलना में पहले से तीसरे स्टेशन की दूरी कितनी होगी?

(8)

एक ऊँची इमारत में लगी लिफ़्ट के अन्दर लिफ़्टमैन ने एक छोटी सी दुकान खोल रखी है। सामान तौलने के लिए वह कमानी तुला (स्प्रिंग बैलेंस) काम में लाता है। बिक्री का काम भी वह तभी करता है जब लिफ़्ट नीचे से ऊपर जा रही हो। कुछ लोगों का कहना है कि लिफ़्टमैन तौलने में ग्राहकों को ठगता है। उसकी कमानी तुला बिलकुल सही है। तुम्हारा क्या ख्याल है?

(9)

गर्मी की छुट्टियाँ लगते ही गुलाबो ने कपड़े बाँधे और दादी के गाँव जाने की तैयार कर ली। वह सुबह-सुबह अपने गाँव से सायकिल पर निकली। पूरे समय एक समान गति से सायकिल चलाते हुए जब वह रास्ते में अपनी मौसी के गाँव रानीपुर पहुँची तब उसकी घड़ी में 8 बजकर 2 मिनट हुए थे। रानीपुर, उसके गाँव और दादी के गाँव के बीच की दूरी के 1/5 हिस्से की दूरी पर था। यहाँ रूके बिना ही वह अपनी सहेली गीता के गाँव 8 बजकर 50 मिनट पर पहुँची। गीता का गाँव, गुलाबो और उसकी दादी के गाँव के ठीक बीच में पड़ता था।

यहाँ भी वह रूकी नहीं। उसने दादी के गाँव पहुँचकर ही दम लिया। अब क्या तुम बता सकते हो कि जब वह दादी के गाँव पहुँची तब उसकी घड़ी में क्या बजा होगा?

तुम भी बनाओ वर्ग-पहेली

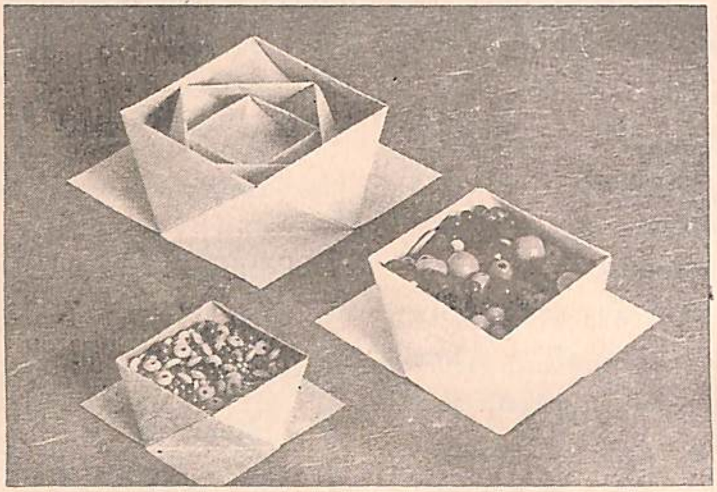
इस अंक में तुमने वर्ग-पहेली पर लेख पढ़ा। उम्मीद है कि तुम्हें वर्ग-पहेली के बारे में काफी कुछ जानने का मौका मिला होगा।

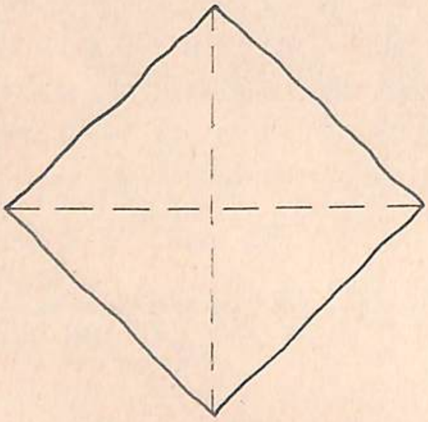
वर्ग-पहेली के लेख में पृष्ठ-14 पर एक जाली दी गई है। अगर तुम भी वर्ग-पहेली बनाना चाहते हो तो इस जाली के लिए शब्द और उनके संकेत बनाकर भेजो। हाँ, एक बात का ध्यान रखना, यही जाली जुलाई, 94 के अंक में प्रकाशित वर्ग-पहेली में भी थी। उसका सही हल इसी अंक में दिया जा रहा है। इसलिए उसमें भरे हुए शब्दों का इस्तेमाल नहीं करना है।

बनी हुई पहेलियाँ हमें 31 दिसम्बर, 94 तक मिल जानी चाहिए। चुनी हुई पहेलियाँ एक-एक करके चकमक के अंकों में प्रकाशित की जाएँगी। एक और बात, जाली को चकमक से काटना मत, बल्कि अलग काग़ज़ पर उतार लेना। अगर तुम इस जाली के बदले कोई और जाली लेना या बनाना चाहते हो तो उसकी छूट भी है।

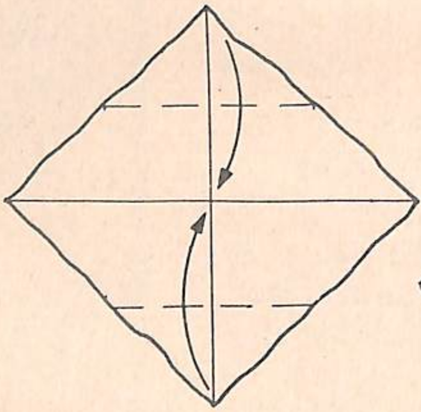
खेल कागज़ का

जापानी डिब्बा

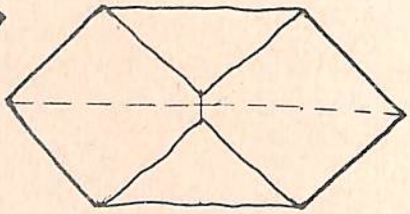




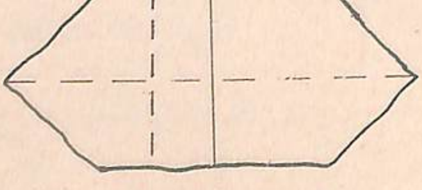
1. एक वर्गाकार काग़ज़ लो। चित्र में दिखाई दे रही टूटी रेखाओं पर से मोड़ बना लो। मोड़ पक्के करके वापस खोल लो।



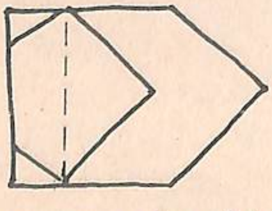
2. अब इस चित्र में दिखाई दे रही टूटी रेखाओं पर से तीर की दिशा में मोड़ लो।



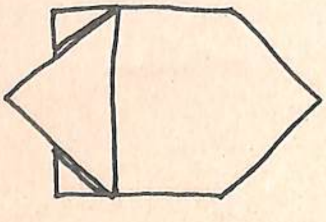
3. ऐसी आकृति मिलेगी। इसे पलट लो।



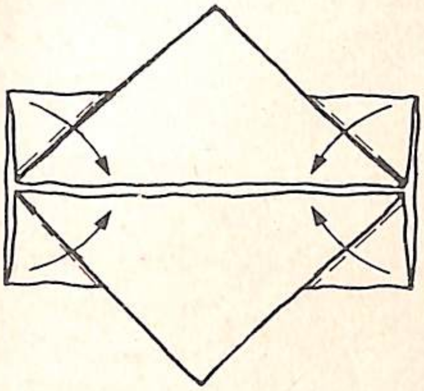
4. चित्र में दिखाई दे रही टूटी रेखा पर से तीर की दिशा में मोड़ लो।



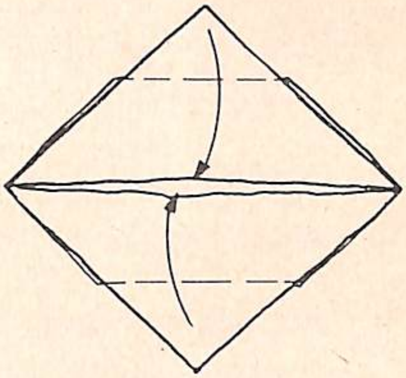
5. इस तरह। अब मुड़े हुए सिरे को वापस उसी दिशा में टूटी रेखा पर से मोड़ लो।



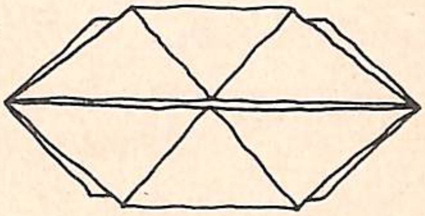
6. इस तरह। अब बाईं ओर के हिस्से को भी चित्र 4 और 5 की क्रिया दोहराते हुए उसी तरह मोड़ लो।



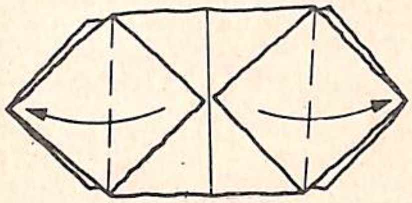
7. ऐसी आकृति मिलेगी। इसमें चारों कोनों पर बनी टूटी रेखाओं पर से तीर की दिशा में मोड़ बना लो। मोड़ पक्के करके वापस खोल लो। अब मुड़े हुए इन चारों कोनों को ऊपरी सतह के नीचे घुसा कर मोड़ दो।



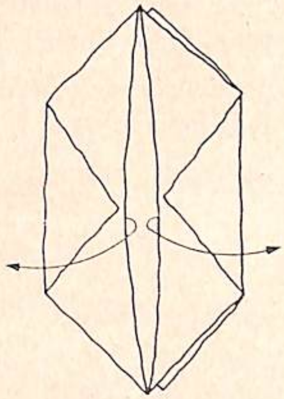
8. इस तरह। अब टूटी रेखाओं पर से तीर की दिशा में मोड़ लो।



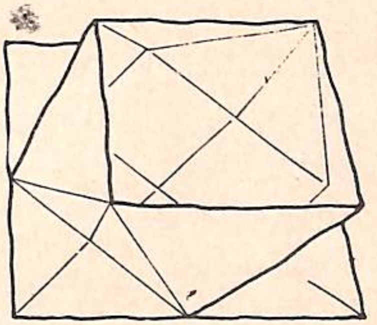
9. ऐसी आकृति मिलेगी। इसे पलट लो।



10. चित्र में दिखाई दे रही टूटी रेखाओं पर से ऊपरी सतहों को तीर की दिशा में मोड़ लो। और फिर आकृति को फिर से पलट लो।



11. अब आकृति को चित्र में दिखाए अनुसार तीर की दिशा में खोलना शुरू करो।



12. इस तरह। दोनों ओर से ठीक से खोल लो और डिब्बे के चारों ओर नीचे की तरफ चारों कोने निकल आएँगे।







उलझन

पापा कहते बनो डॉक्टर
माँ कहती इंजीनियर!

भैया कहते इससे अच्छा
सीखो तुम कम्प्यूटर!

चाचा कहते बनो प्रोफ़ेसर
चाची कहती अफ़सर!
दीदी कहती-आगे चलकर
बनना तुम्हें कलेक्टर!

बाबा कहते फ़ौज में जाकर
जग में नाम कमाओ!

दादी कहती-घर में रहकर
ही उद्योग लगाओ!

सबकी अलग-अलग अभिलाषा
सबका अपना नाता!

लेकिन मेरे मन की उलझन
कोई समझ न पाता!

❑ सुरेन्द्र विक्रम

चित्र : अक्षत चराटे



मनुष्य महाबली कैसे बना!

हिमनदियाँ पीछे हटीं

हर साल, जब बर्फ़ पिघलना शुरू करती है, तो उसके आसपास की सभी जगहों पर - जंगलों और खेतों में, गाँव की सड़कों पर, सड़कों के किनारे की खाइयों में - मतवाले, तेज़ी से दौड़ते, शोर मचाते नाले और झरने अचानक नज़र आने लगते हैं। शरारती बच्चों की तरह, जिन्हें घर में नहीं रखा जा सकता, वे जमी हुई मैली बर्फ़ के नीचे से फूट पड़ते हैं। पानी के नाले पत्थरों के ऊपर से और सड़कों को पार करते लगातार आगे बढ़ते और हवा को अपनी कलकल से भरते हुए भाग निकलते हैं।

बर्फ़ धूप लगने वाले ढलानों और खुले मैदानों से हटकर खड्डों, खाइयों और दीवारों की आड़ में छायादार कोनों में चली जाती है, जहाँ वह कभी-कभी मई तक सूर्य की गरम किरणों से छिपी पड़ी रहती है।

प्रकृति रात भर में बदल गई लगती है। कुछ ही दिनों के भीतर सूरज नंगी डालों को पत्तियों से भर देता है।

ऐसा हर वसंत में सर्दियों में जमी बर्फ़ीली चादर के पिघल जाने के साथ होता है।

लेकिन प्रागैतिहासिक काल में क्या हुआ, जब बर्फ़ की वह विशाल चादर आख़िर पिघलने लगी, जिसने दुनिया को एक सफ़ेद टोपी की तरह ढाँक रखा था?

तब नालों और छोटी नदियों के बजाय बर्फ़ के नीचे से बड़ी-बड़ी गहरी-गहरी नदियाँ फूट पड़ीं। इनमें से कई आज भी रास्ते की हर छोटी नदी और नाले के पानी को समेटती सागर तक जा रही हैं।

यह प्रकृति का महान पुनर्जागरण था, वह महान वसंत था, जिसने उत्तर के नंगे मैदानों को विशाल वनों से ढक दिया।

लेकिन वसंत तुरन्त ही ज़ोर नहीं पकड़ लेता। कभी-कभी ऐन मई के महीने में भी, किसी गरम और धूपदार दिन के बाद अचानक ठण्डी हवा चल पड़ती है और अगले दिन जब हम सोकर उठते हैं, तो मकानों की छतों पर बर्फ़ जमी होती है। बाहर हर चीज़ सफ़ेद होती है, मानो वसंत अभी आया ही नहीं।

महान प्रागैतिहासिक वसंत ने भी सर्दी को एकदम ही परास्त नहीं कर दिया। हिमनदियाँ धीरे-धीरे पीछे हटीं, मानो उन्हें उनकी इच्छा के खिलाफ पीछे धकेला जा रहा था, वे कई-कई सदियों तक अटकी रहीं।



कभी-कभी कुछ पीछे हट जाने के बाद हिमनदियाँ रुक गईं, मानो अपनी शक्ति इकट्ठा कर रही हों और इसके बाद वे फिर आगे आईं। टुन्ड्रा उनके साथ दक्षिण की ओर आया और अपने चिरसंगी रेंडियर को अपने साथ ले आया।

मैदान पर काई और शैवाल फैल गए और उन्होंने घास को पीछे हटा दिया। बाइसन और घोड़े दक्षिण की ओर घास भरे प्रदेशों की तरफ चले गए।

गरमी और सर्दी की लड़ाई बहुत ही लम्बे समय तक चलती रही, लेकिन अन्त में गरमी की ही जीत हुई।

पिघलती हिमनदियों के नीचे से बड़ी-बड़ी नदियाँ बह चलीं। धरती को जिस बर्फ़ानी टोपी ने ढाँक रखा था, वह सिकुड़ने और सिमटने लगी। बर्फ़ की सीमान्त रेखा और उत्तर में चली गई, उसके साथ-साथ टुन्ड्रा भी चला गया। उन प्रदेशों में, जहाँ कभी केवल शैवाल, काइयाँ और जगह-जगह बिखरे हुए टेढ़े-मेढ़े चीड़ के पेड़ ही थे, वहाँ पाँच-पाँच फुट घेरेवाले विशाल चीड़वन खड़े हो गए।

और इस बीच गरमी लगातार तेज़ और तेज़ होती जा रही थी।

एस्प और भूर्ज वृक्षों की हरी फुनगियाँ अधिकाधिक चीड़ वृक्षों की गहरी हरी पत्तियों को फोड़ ऊपर निकली आ रही थीं। उनके पीछे-पीछे चौड़े पत्तेवाले पेड़ों की विशाल वाहिनी उत्तर की ओर जा रही थी।

"चीड़-युग" अब "बलूत-युग" में बदल गया था। जंगल के एक घर ने दूसरे को जगह दे दी थी।

लेकिन जंगल के हर घर के अपने ही बाशिंदे होते हैं।

जब पत्रधारी जंगल उत्तर की ओर आए, तो झाड़ियाँ, खुमियाँ और बेरियाँ भी उनके साथ-साथ आईं और उन्हीं के साथ-साथ जंगल के भोजन को खाने वाले पशु भी आ गए। इन पशुओं में जंगली सुअर, सांभर, बाइसन और विशाल सींगोंवाले लाल हिरन भी थे। मधुप्रेमी भूरा रीछ जंगली शहद की तलाश में नीचे के झाड़-झंखाड़ को पार करके आ गया। खरगोशों को दबोचने के लिए भेड़िये गिरी हुई पत्तियों पर दबे पंजों से दौड़ने लगे। गोल-गोल मुँह और छोटे-छोटे पंजों वाले बीवर जंगली नालों पर अपने बाँध बनाने लगे। भाँति-भाँति के पक्षियों ने वन को अपनी चहचहाहट से भर दिया और जंगल की झीलों पर सारसों और हंसों की आवाज़ें सुनाई देने लगीं।



बर्फ़ के कैदी

प्रकृति में जब ये बड़े-बड़े परिवर्तन हो रहे थे, मनुष्य एक तरफ दर्शक बना नहीं खड़ा रह सकता था। नाटक के दृश्यों की तरह उसके इर्द-गिर्द हर चीज़ बदल रही थी। लेकिन नाटक के विपरीत हर दृश्य कई-कई हज़ार साल लम्बा था, जबकि रंगमंच लाखों वर्गमील में फैला हुआ था।

और इस विश्वव्यापी नाटक में मनुष्य दर्शकों में नहीं था, वह अभिनेताओं में एक था।

हर बार दृश्य बदलने पर मनुष्य को ज़िन्दा रहने के लिए ज़िन्दगी के अपने ढंग को बदलना पड़ा।

जब टुन्ड्रा खिसककर दक्षिण की ओर आने लगा, तो वह अपने साथ रेंडियर को लाया, मानो ये जानवर उसके क़ैदी थे और उससे जकड़े हुए थे। रेंडियर इस अदृश्य ज़ंजीर के एक सिरे पर थे और टुन्ड्रा की काई और शैवाल दूसरे पर।

रेंडियर, काई और शैवाल चरता टुन्ड्रा में घूमता था और रेंडियर का पीछा करता आदमी उसके पीछे-पीछे।

स्तेपी में मनुष्य घोड़ों और बाइसनों का शिकार करता था। लेकिन टुन्ड्रा में उसे रेंडियर का ही शिकार करना पड़ता था।

टुन्ड्रा में रेंडियर के अलावा वह शिकार कर भी किसका सकता था?

मैमथ सारे-के-सारे मर चुके थे। प्रागैतिहासिक मनुष्य ने हज़ारों की तादाद में उनका संहार करके अपने आवासों के पास मैमथ की हड्डियों के पहाड़ लगा दिए थे। उसने खाने के लिए घोड़ों के बड़े-बड़े झुण्डों का सफ़ाया कर दिया था और जो बाकी बचे थे वे, जब स्तेपी की रसीली घासों की जगह टुन्ड्रा के सूखे शैवाल ने ले ली तो, सुदूर दक्षिण को चले गए थे।

इसलिए टुन्ड्रा में रेंडियर ही प्रागैतिहासिक मनुष्य का अकेला पोषक बन गया। वह उसका माँस खाता, उसकी खाल के कपड़े पहनता और उसके सींगों से अपने भाले और काँटेदार बर्छियाँ बनाता। यही कारण है कि उसे अपने जीवन का पूरा ढर्रा रेंडियर के ढर्रे के अनुकूल बनाना पड़ा।

जहाँ भी रेंडियरों के झुण्ड जाते, आदमी उनके पीछे-पीछे जाता। जब कबीला डेरा डालता तो औरतें सहज ही तम्बू खड़े कर लेतीं और उन्हें खालों से ढक देतीं। उन्हें मालूम था कि वे एक ही जगह ज़्यादा दिन न रहेंगे। जब मच्छरों के बादल रेंडियरों को नए चरागाहों की तलाश में आगे जाने को विवश कर देते, तो लोगों के पास इसके अलावा और कोई चारा न होता कि अपना डेरा उखाड़ें और उनके पीछे चल दें। औरतें तम्बुओं को उखाड़कर अपनी पीठ पर लटका लेतीं। वे थकान से चूर टुन्ड्रा में चलती चली जातीं, जबकि आदमी उनके साथ-साथ अपने भाले या काँटेदार बर्छियों के अलावा और कुछ भी न लिए हुए उत्साह के साथ चलते जाते। घर के धंधों की चिंता में पड़ना मर्द का काम नहीं था।

लेकिन फिर टुन्ड्रा उत्तर की तरफ हटने लगा और उसी के साथ-साथ रेंडियर भी जाने लगा। टुन्ड्रा की जगह विराट वन खड़े हो गए।



प्रागैतिहासिक क़बीलों का तब क्या हुआ?

कुछ शिकारी क़बीले रेंडियरों के झुण्डों के पीछे-पीछे उत्तर में आर्कटिक की तरफ चले गए। यही सबसे आसान रास्ता था, क्योंकि तब तक वे उत्तरी जलवायु के अभ्यस्त हो चुके थे। हिम-युग की कड़ी ठण्ड हज़ारों साल रही थी। इन हज़ारों वर्षों में प्रागैतिहासिक मनुष्य ने सर्दी से लड़ना, अपने कपड़े जानवरों की गरम खाल से बनाना सीख लिया था। बाहर जितनी ही ज़्यादा ठण्ड होती, उसके आवास के चूल्हे में आग उतनी ही तेज़ी से जलती।

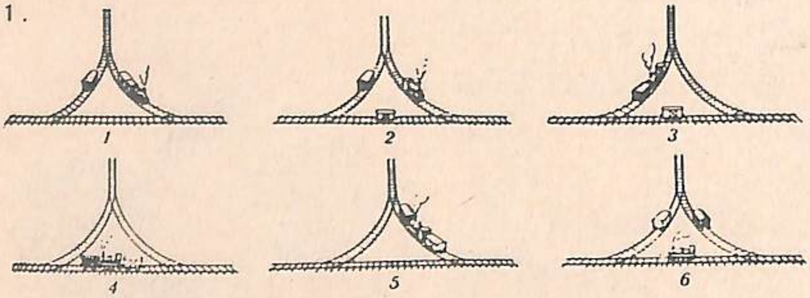
आर्कटिक जाना उसी जगह रहने की अपेक्षा सरल था। फिर भी सुगमतम मार्ग ही हमेशा सबसे अच्छा मार्ग नहीं रहता, और मानव-जाति का वह हिस्सा, जो टुन्ड्रा के साथ उत्तर चला गया, अन्त में घाटे में रहा, क्योंकि उसके लिए हिम-युग की आयु हज़ारों वर्ष के लिए बढ़ गई। ग्रीनलैण्ड के एस्किमो आज भी बर्फ़ में ही रहते हैं और प्रकृति के विरुद्ध – एक ऐसी प्रकृति, जो निष्ठुर और बलवान है – अविराम संघर्ष करते रहते हैं।

जो कबीले पीछे ही रह गए, उनकी नियति बिलकुल भिन्न थी। शुरू-शुरू में उगते जंगलों में उनकी ज़िन्दगी और भी ज़्यादा मुश्किल हो गई। लेकिन अंततः उन्होंने अपने को उस बर्फ़ानी क़ैदखाने से आज़ाद कर लिया, जिसमें उनके पुरखे हज़ारों साल क़ैद रहे थे।

(अगले अंक में जारी)
'मनुष्य महाबली कैसे बना!' से साभार।
प्रस्तुति : राजेश उत्साही

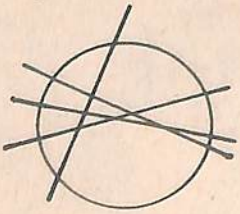
माथा पच्ची : हल सितम्बर, 94 अंक के

1.

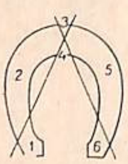


2. राजू की मछलियाँ हैजे से तो नहीं मरीं। हाँ, एक सम्भावना यह है कि उबले पानी में ऑक्सीजन की मात्रा कम होने के कारण मर गई हों। (तुमने क्या कारण खोजा!)

3.



4.



5. व्यापारी तेल को हल्का-सा गर्म करके रखता था। इससे तेल का आयतन बढ़ जाता था। इस तरह वह जितना ख़रीदता था, उससे ज़्यादा बेचकर मुनाफा कमाता था।

6. उन्नीस बार 9 आएगा।

7. हाँ, दोनों डिब्बे एक ही हैं।

वर्ग पहेली- 37 : हल

1 अ		2 आ	वा	3 रा		4 क	5 पा	स
6 प	र्व	त		7 स	च		ल	
गा		श		ली		8 ह	की	9 म
	10 क		11 स	ला	12 ह			द
13 न	र	सिं	ह		14 न	ज़	15 रा	ना
ल			16 ज	17 वा	न		ख	
18 क	19 सी	टी		हि		20 ख		21 स
	गा		22 जा	या		23 र	ही	म
24 मा	त	म		25 त	न	हा		द

इस वर्ग पहेली का कोई सर्वशुद्ध हल प्राप्त नहीं हुआ। कम से कम एक ग़लती वाले हल तीन पाठकों ने भेजे हैं। इनके नाम हैं- आर.डी. सिंह, सोनहत, सरगुजा। प्रदीप तिर्की, चन्दौरा, सरगुजा। सुनीता साहू, डोंगरडुला, रायपुर। **सभी म.प्र.। इन्हें तीन माह तक चकमक उपहार में भेजी जाएगी।**

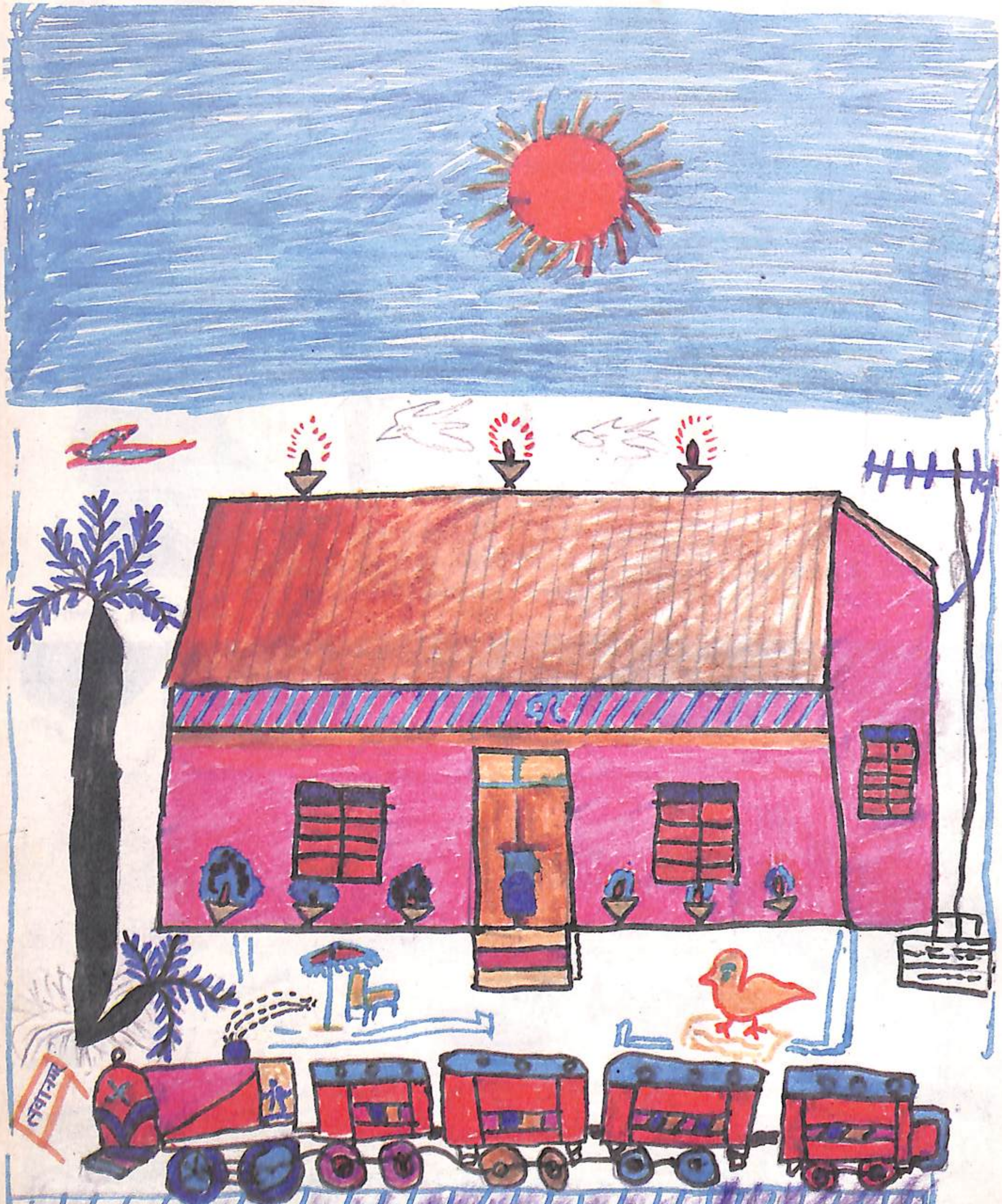


मेहराज, सातवीं, पीसांगन, राजस्थान



शाहनवाज खान, दस वर्ष, पीसांगन, राजस्थान

पंजीयन क्रमांक 50309/85 के अंतर्गत भारत के समाचार-पत्रों के रजिस्ट्रार द्वारा पंजीकृत। डाक पंजीयन क्रमांक BPL/DN/MP/431/94



मनमोहन सिंह लोधवंशी, तीसरी, तवानगर, होशंगाबाद

रेक्स डी रोज़ारियो की ओर से विनोद रायना द्वारा राजकमल ऑफसेट प्रिन्टर्स, भोपाल से मुद्रित एवं एकलव्य, ई-1/208, अरेरा कालोनी, भोपाल-462 016 से प्रकाशित।
संपादक : विनोद रायना